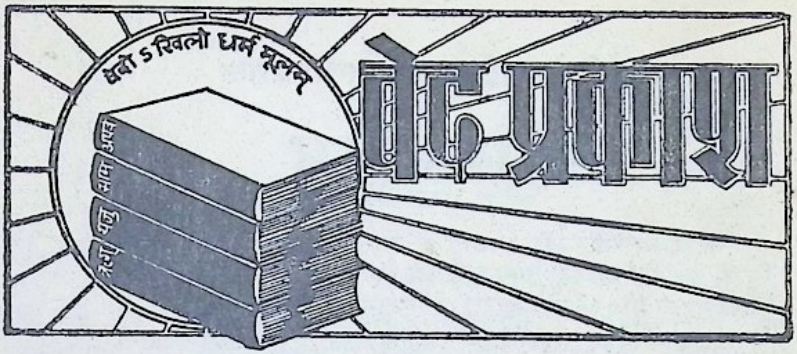

वेदप्रकाश ३४वें वर्ष में

इस अंक के साथ 'वेदप्रकाश' अपने जीवन के ३३ वर्ष पूर्ण कर चौंतीसवें वर्ष में प्रवेश कर रहा है। इस वर्ष हमने ८० पृष्ठ का ऋषि बोध कथा अंक भी अपने पाठकों को 'वेदप्रकाश' के वार्षिक शुल्क में ही दिया था। इस अंक के अतिरिक्त 'ओ३म् शतकम्' 'गायत्री शतकम्' अंक भी दिये। 'महर्षि दयानन्द के सत्य-अहिंसा के प्रयोग' आपके हाथ में है। इनके अतिरिक्त ६ मन्त्रों की विस्तृत व्याख्याएँ भी हमने पाठकों को भेंट की हैं।

'वेदप्रकाश' अपने ढंग का अनूठा पत्र है। साप्ताहिक पत्र तो पढ़कर रद्दी में बेच दिये जाते हैं, परन्तु 'वेदप्रकाश' के लेख सैद्धान्तिक और स्थायी महत्त्व के होते हैं, अतः पाठक 'वेदप्रकाश' के अंकों का बन्धन कराकर उन्हें सुरक्षित रखते हैं।

'वेदप्रकाश' में वर्ष भर में लगभग हम ३०० पृष्ठ की ठोस सामग्री देते हैं। पुस्तक रूप में इतने बड़े ग्रन्थ का मूल्य ४०) से कम नहीं होता। बढ़िया कागज, उत्तम छपाई और स्थायी महत्त्व के लेखों से युक्त ३०० पृष्ठों का मूल्य केवल ८.०० वार्षिक !

इस अंक के साथ आपका शुल्क समाप्त है, अतः अपना शुल्क तुरन्त भेजें। इस वर्ष भी स्थायी महत्त्व के कई विशेषांक निकलेंगे। अपनी प्रतियाँ शीघ्र सुरक्षित करा लें। —जगदीश्वरानन्द सरस्वती

वेदप्रकाश वार्षिक शुल्क ८.०० भेजते समय ग्राहक संख्या लिखें। मनीआर्डर गोविन्दराम हासानन्द, नई सड़क दिल्ली के नाम भेजें। नये ग्राहक हैं तो 'नया' शब्द लिख दें। —व्यवस्थापक

महामुनि कृष्णद्वैपायन व्यासजी प्रणीत

महाभारतम्

महाभारत धर्म का विश्वकोश है। व्यासजी महाराज की घोषणा है कि जो कुछ यहाँ है, वही अन्यत्र है, जो यहाँ नहीं है वह कहीं नहीं है। इसकी महत्ता और गुरुता के कारण इसे पञ्चम वेद कहा जाता है।

वेद को छोड़कर सभी वैदिक ग्रन्थों में प्रक्षेप हुए हैं। महाभारत भी इस प्रक्षेप से बच नहीं सका। महाभारत की श्लोक संख्या बढ़कर एक लाख पहुँच गई। इसमें असम्भव गप्पों, अश्लील कथाओं, विचित्र उत्पत्तियों अप्रासङ्गिक कथाओं को ठूंसा गया। इतने बड़े ग्रन्थ को पढ़ना कठिन हो गया।

आर्यजगत् के ही नहीं भारत के प्रसिद्ध विद्वान्

स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती

ने महाभारत का एक विशिष्ट संस्करण तैयार किया है।

इस ग्रन्थ में असम्भव, अश्लील और अप्रासांगिक कथाओं को निकाल दिया गया है। लगभग १६,००० श्लोकों में सम्पूर्ण महाभारत पूर्ण हुआ है। श्लोकों का तार-तम्य इस प्रकार मिलाया गया है कि कथा का सम्बन्ध निरन्तर बना रहता है।

- ☐ यदि आप अपने प्राचीन गौरवमय इतिहास की, संस्कृति और सभ्यता की, ज्ञान-विज्ञान की, आचार-व्यवहार की गौरवमयी झाँकी देखना चाहते हैं,
- ☐ यदि योगिराज कृष्ण की नीतिमत्ता देखना चाहते हैं,
- ☐ यदि प्राचीन समय की राज्य-व्यवस्था की झलक देखना चाहते हैं,
- ☐ यदि आप जानना चाहते हैं कि क्या कौरवों का जन्म घड़ों में से हुआ था? क्या द्रौपदी का चीर खींचा गया था, क्या एकलव्य का अगूठा काटा गया था, क्या युद्ध के समय अभिमन्यु की अवस्था सोलह वर्ष की थी, क्या कर्ण सूतपुत्र था, क्या जयद्रथ को धोखे से मारा गया आदि
- ☐ यदि आप भातृप्रेम, नारी का आदर्श, सदाचार, धर्म का स्वरूप, गृहस्थ का आदर्श, मोक्ष का स्वरूप, वर्ण और आश्रमों के धर्म, प्राचीन राज्य का स्वरूप आदि के सम्बन्ध में जानना चाहते हैं, तो एक बार इस ग्रन्थ को पढ़ जाइए।

विस्तृत भूमिका, विषय-सूची, श्लोक-सूची आदि से युक्त इस महान् ग्रन्थ का मूल्य है केवल ३००) रुपये।

गोविन्दराम हासानन्द, दिल्ली-६

॥ ओ३म् ॥

वेदप्रकाश

संस्थापक : स्वर्गीय श्री गोविन्दराम हासानन्द

वर्ष ३३, अंक १२] वार्षिक मूल्य : आठ रुपये [जौलाई, १९८४

सम्पा० : विजयकुमार आ० सम्पादक : स्वा० जगदीश्वरानन्द सरस्वती

स्वामी दयानन्द के
सत्य-अहिंसा के प्रयोग

स्वर्गीय श्री पं० चन्द्रमणि विद्यालंकार

पर्व १—युक्तप्रान्त (उत्तर प्रदेश) में

१

अनूपशहर की बात है कि एक दिन एक ब्राह्मण स्वामीजी के समीप आया और अभिवादन करने के पश्चात् उन्हें नम्रतापूर्वक पान भेंट किया। स्वामीजी ने ज्यों ही पान मुख में रखा और उसका रस लिया, तुरन्त उन्हें भान हुआ कि इसमें तो विष पड़ा हुआ है। स्वामीजी ने उस ब्राह्मण को तो कुछ नहीं कहा, परन्तु वहाँ से उठ गङ्गा-पार चले गये। वहाँ जाकर वस्ती-न्यौली क्रिया से विष बाहर निकाल दिया और पुनः अपने आसन पर आ विराजे।

उन दिनों अनूपशहर के तहसीलदार सय्यद मुहम्मद साहब थे। वे स्वामीजी के समीप प्रायः नित्यप्रति आया करते थे और उनके सद्गुणों के प्रभावित होकर उनके परमभक्त बन गये थे। तहसीलदार साहब को स्वामीजी को विष देने की बात पता लग गयी। उन्होंने तुरन्त उस अपराधी को गिरफ्तार कराया और जेल में डाल दिया। इसके बाद वे यह सोचते हुए कि महाराज बड़े प्रसन्न होंगे कि मैंने हत्यारे को कैद में डाल दिया है, उनके पास पहुँचे। परन्तु, इस बार स्वामीजी उनसे बोले ही नहीं और अपनी दृष्टि दूसरी ओर फेर ली। इसे देखकर तहसीलदार अत्यन्त चकित हुए। सकुचाते हुए स्वामीजी से पूछने लगे—"महाराज! आप मुझसे इस प्रकार अप्रसन्न क्यों हैं? मेरा क्या

अपराध है?" स्वामीजी ने उत्तर दिया—"मैंने सुना है, आपने मेरे कारण आज एक मनुष्य को आबद्ध किया है, परन्तु, मैं तो मनुष्यों को बँधवाने नहीं आया हूँ, प्रत्युत छुड़वाने आया हूँ। यदि दुष्ट अपनी दुष्टता को नहीं छोड़ते, तो हम क्यों अपनी श्रेष्ठता का परित्याग करें।" यह सुनकर तहसीलदार चकित हो गये और तुरन्त उस ब्राह्मण को कैद से छोड़ दिया गया।

२

काशी में एक दिन एक मनुष्य ने भक्त का रूप धारण करके भक्ति-भावपूर्वक स्वामीजी की सेवा में भोजन लाकर अर्पित किया। उस समय स्वामीजी भोजन पा चुके थे, अतः ग्रहण नहीं किया। तब उस कपटी भक्त ने पान प्रस्तुत करते हुए निवेदन किया, महाराज यदि भोजन स्वीकार नहीं करते तो कृपया यह पान तो ले लीजिए। स्वामीजी ने पान का बीड़ा ले लिया। वे ज्यों ही उसे बीड़े को खोलकर देखने लगे कि वह कपटी भक्त झटपट वहाँ से निकल भागा। इस बीड़े की जाँच सरकारी अस्पताल में कराई गयी। पता लगा इसमें हलाहल विष पड़ा हुआ है।

३

अपने काशी-वास में स्वामीजी ने अन्य सम्प्रदायों की चर्चा के साथ-साथ मुसलमानी मत की भी आलोचना की। इससे वहाँ के कुछ मुसलमान भाई बहुत रुष्ट हो गये। एक दिन सायंकाल स्वामीजी गंगा-तट पर समाधि में निमग्न बैठे थे कि एक मुसलमानों की टोली वहाँ आ निकली। उस टोली के कुछ-एक मनुष्यों ने स्वामीजी को पहचान लिया और कहा—देखो, यह वही बाबा है, जो कुछ दिन हुए हमारे मत केविरुद्ध व्याख्यान दे रहा था। उस टोली में से दो मनुष्य अत्यधिक आवेश में आकर आगे बढ़े और स्वामीजी को गङ्गा में डुबा देने की ठानी। दोनों ने दोनों हाथों से स्वामीजी की दोनों भुजाएँ कन्धों के पास से दृढ़तापूर्वक पकड़ लीं। वे स्वामीजी को झुलाकर गङ्गा-धार में फेंकना ही चाहते थे कि उन्होंने अपनी दोनों भुजाएँ सिकोड़कर अपने शरीर के साथ लगा लीं और बलपूर्वक उछलकर दोनों मनुष्योंसहित गङ्गा में कूद पड़े। उन दोनों व्यक्तियों के हाथ कुछ काल तक तो स्वामीजी के शिकंजे में कसे रहे, परन्तु नदी में गोता लगाते समय दयापूर्वक उन्हें छोड़ दिया।

वे दोनों मनुष्य तब भी अपनी घातक वृत्ति से बाज नहीं आये और पानी से बाहर निकलकर अपने दूसरे साथियोंसहित हाथों में ढेले-ईंट-पत्थर आदि लिये बड़ी देर तक इस ताक में गङ्गा-तट पर खड़े रहे कि बाबा अपना सिर बाहर निकाले और वे उसे मारें। स्वामीजी भी उनकी

घातक वृत्ति को ताड़ गये थे, इसलिए वे अपने प्राणों को रोके हुए नदी-तल पर ही पद्मासन लगाये बैठे रहे। अँधेरा हो जाने पर वह टोली, यह समझकर कि बाबा डूब चुका है, वहाँ से चल दी और स्वामीजी जल से बाहर निकलकर अपने आवास पर लौट आये।

४

काशी में एक दिन स्वामीजी घूमने जा रहे थे। एक हट्टा-कट्टा, महा-मल्ल-समान बलिष्ठ गुण्डा उनके पीछे हो लिया। उसके हाथ में एक मोटा लट्ठ भी था। स्वामीजी ने पीछे फिरकर देखा तो उन्हें वह लठैत घातक स्वभाव का जान पड़ा। वे वहीं ठहर गये और उसकी ओर मुँह करके इतनी जोर से हुँकार-नाद गुँजाया कि वह गुण्डा अत्यन्त भयभीत होकर चीत्कार करता हुआ, उलटे पाँव भाग निकला।

५

सोरों की बात है कि शास्त्र-चर्चा में चक्रांकित पण्डित स्वामीजी से पराजित होकर पेट में बल खाने लगे और स्वामीजी की हत्या करके अपने को शान्त करना चाहा। इस निमित्त वे एक दिन आधी रात बीते स्वामीजी के आवास स्थान पर आये। उस समय पास ही के एक स्थान में दूसरा साधु गाढ़ निद्रा में पड़ा सो रहा था। उन्होंने इसी साधु को दयानन्द समझा और चुपके से खटिया समेत उठाकर गङ्गा की धारा में फेंक दिया। जब वह साधु डूबने लगा और चिल्ला-चिल्लाकर रक्षा के लिए पुकारने लगा तो उन्हें पता लगा कि यह दयानन्द नहीं है, तब उसे जल में से निकाला।

६

सोरों में एक दिन स्वामीजी सभा में बैठे हुए धर्मोपदेश दे रहे थे, सभा निस्तब्ध भाव से महाराज के वचनामृत का मधुर पान कर रही थी, इतने में एक हृष्ट-पुष्ट जाट मोटा सोटा कन्धे पर धरे और क्रोध के मारे तमतमाता लाल चेहरा किये सभा को चीरता हुआ सीधा स्वामीजी के पास पहुँचा। सभा की नीरवता को भंग करके दाँतों को पीसता हुआ कड़ककर बोला—"अरे साधु ! तू ठाकुर-पूजा का खण्डन करता है ? तू श्रीगङ्गा मैय्या की निन्दा करता है ? तू देवताओं के विरुद्ध बोलता है ? झटपट बता तेरे किस अंग पर यह सोटा मारकर तेरा काम तमाम कर दूँ ?"

इस दृश्य को देखकर सारी सभा घबड़ा उठी, परन्तु स्वामीजी के चेहरे पर किंचिन्मात्र भी परिवर्तन नहीं दिखाई पड़ा। वे मुस्कराते हुए बोले—"भद्र ! यदि आपके विचार में मेरा धर्म-प्रचार करना कोई

महाभारत सूक्ति सुधा

संकलन कर्ता—पण्डित चन्द्रभानु सिद्धान्तभूषण
भूमिका लेखक—महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती
पुस्तक पर श्री पं० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार की सम्मति

महाभारत एक महान् ग्रन्थ है, उस सम्पूर्ण ग्रन्थ का अवगाहन करना विरले व्यक्तियों का काम है। इस विशाल ग्रन्थ का एक हिस्सा अनुशासन पर्व है। अनुशासन पर्व में भिन्न-भिन्न विषय सूक्तियों में गुँथे हुए हैं। ये सूक्तियाँ जीवन के भिन्न-भिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालती हैं। सूक्तियों का काम थोड़े में बहुत-कुछ कह देना है। लम्बा-चौड़ा उपदेश वह काम नहीं करता जो थोड़े-से शब्दों में सिमटी हुए एक सूक्ति कर जाती है। पं० चन्द्रभानु जी ने महाभारत के अनुशासन पर्व में से सहस्रों सूक्तियों का संग्रह किया है। ये सूक्तियाँ क्या हैं, जीवन के फार्मूले या गुर हैं। महाभारत ही नहीं, सारा संस्कृत-साहित्य सूक्तियों से भरा पड़ा है। इन सूक्तियों में जहाँ व्यक्ति के प्रति उपदेश है, वहाँ अनेक स्थानों पर आधारभूत तथ्यों का भी वर्णन है। उदाहरणार्थ, **"तपसा सौभाग्यं रत्नानि विविधानि च प्राप्यतो कर्मणा सर्वं न दैवादकृतात्मना"**—अर्थात् मनुष्य को परिश्रम रूपी तप से रूप, सौभाग्य और नाना प्रकार के रत्न प्राप्त होते हैं। कर्म अर्थात् उद्योग से सब कुछ मिल जाता है, परन्तु भाग्य के भरोसे बैठे रहने से कुछ नहीं मिलता। महाभारत के अनुशासन पर्व की इस सूक्ति में जहाँ कर्म करने का उपदेश है, वहाँ इस तथ्य को भी प्रकट कर दिया गया है कि भाग्य पर सब-कुछ छोड़ देने से कुछ नहीं बनता। पं० चन्द्रभानु जी ने ३६४ पृष्ठों के इस ग्रंथ में महाभारत के अनुशासन पर्व में से इसी प्रकार की सूक्तियों का चयन कर पाठक को थोड़े में बहुत-कुछ दे दिया है। इस पुस्तक की विशेषता यह है कि जिन-जिन विषयों पर सूक्तियों का संग्रह किया गया है उन्हें अकारादि-क्रम से दिया गया है। इस प्रकार विषयानुक्रमणिका देखने की ही आवश्यकता नहीं रही। अगर कोई "मन" सम्बन्धी सूक्तियाँ देखना चाहे, तो वह वर्ण-क्रमानुसार "म" के प्रकरण को निकाल ले। वहाँ "मन" के सम्बन्ध में अनुशासन पर्व के मुख्य-मुख्य श्लोकों और सूक्तियों का संग्रह मिल जाएगा। यह कार्य अत्यन्त परिश्रम-साध्य है। पण्डित चन्द्रभानु जी महामहोपध्याय हैं, और जीवन-भर उपदेशक रहे हैं। अब वृद्धावस्था में वे सेवा-निवृत्त हुए हैं, परन्तु कार्य-निवृत्त नहीं हुए, अभी तक ७५ वर्ष की आयु पार कर वे उपदेशप्रद लेखन में प्रवृत्त हैं। उन्हें प्रभु दीर्घायु करे ताकि वे इसी प्रकार साहित्य-निर्माण द्वारा जनता की सेवा करते रहें। मैं आशा करता हूँ कि जो लोग संस्कृत के ग्रन्थों का गहन अध्ययन न कर चंचुपात करना चाहेंगे उनके लिए भी यह ग्रन्थ उपयोगी सिद्ध होगा।

पृष्ठ संख्या ३६४, सजिल्द, मूल्य ४०.०० रुपये मात्र

गोविन्दराम हासानन्द

४४०८, नई सड़क, दिल्ली-११०००६

अपराध है, तो इस अपराध का प्रेरक मेरा यह मस्तिष्क है। यही मुझे खण्डन की बातें सुझाता है सो यदि आप अपराधी को दण्ड देना चाहते हैं तो, लो, मेरे सिर पर सोटा मारकर इसे दण्डित करो"—इन शब्दों के साथ ज्यों ही स्वामीजी ने अपने नेत्रों की ज्योति उसके नेत्रों में डालकर देखा कि वह फूट-फूटकर रोने लगा और स्वामीजी के चरणों में लोट-पोट होकर क्षमा माँगने लगा। स्वामीजी ने उसे धीरज बँधाते हुए कहा—"प्यारे ! तुमने मेरा कोई अपराध नहीं किया। तुम मुझे मारते, तब भी कोई बात थी। अब यों ही क्यों रो रहे हो। जाओ, ईश्वर तुम्हें सत्य मार्ग प्रदर्शन करें।"

७

मिर्जापुर की घटना है। एक रात स्वामीजी अपने आवास में बैठे हुए एक जिज्ञासु के सन्देहों को प्रश्नोत्तर द्वारा दूर कर रहे थे। इतने में दो भीमकाय बलिष्ठ गुण्डे आ पहुँचे। वे मना करने पर भी बार-बार हँसते और छेड़-छाड़ करते ही रहे। एक-दो बार तो स्वामीजी ने उन्हें कोमल शब्दों में समझाया, परन्तु वे कहाँ समझनेवाले थे। वे तो आये ही इसलिए थे कि स्वामीजी को तंग किया जाए। जब वे किसी तरह नहीं माने तो स्वामीजी ने मन्युरूप धारण करके बड़े ज़ोर से हुँकार-नाद किया। इस हुँकार से वे दोनों गुण्डे काँप उठे और मूर्छित होकर भूमि पर गिर पड़े। वह हुँकार-नाद इतना तीव्र था कि पास बैठे जिज्ञासु को भी अपने कानों में अँगुलियाँ देनी पड़ीं। स्वामीजी और जिज्ञासु ने तुरन्त जल के छींटे देकर उन दोनों को सचेत किया। जब वे उठकर बैठे तो दोनों पसीना-पसीना हो रहे थे और उनका मल-मूत्र भी निकला पड़ा था। स्वामीजी ने कहा—"संन्यासी लोग किसी को मारा-पीटा नहीं करते, इसलिए डरो नहीं। जाओ, कपड़े सँभालकर निर्भयता से चले जाओ।"

८

जिन दिनों स्वामीजी मिर्जापुर में ठहरे हुए थे, उन दिनों एक ओझा वहाँ आये हुए थे। उन्होंने नगर भर में प्रसिद्ध किया कि उनके पास ऐसे-ऐसे यन्त्र-मन्त्र सिद्ध हैं कि यदि कोई उनका पुरश्चरण कराए, तो इक्कीसवें दिन निश्चय से दयानन्द का देह-पात हो जाएगा। इसपर एक सेठ ने पुरश्चरण का सब खर्च अपने ऊपर लिया और पुरश्चरण प्रारम्भ हो गया।

मन्त्र-प्रयोग करते अभी तीन-चार दिन ही हो पाये थे कि दैवयोग से मन्त्र-प्रयोग करानेवाले सेठजी के गले पर एक फोड़ा निकल आया। वह विषैला फोड़ा दिन-प्रतिदिन भयङ्कर ही रूप धारण करता चला गया।

सत्यार्थप्रकाश

कई महत्त्वपूर्ण परिशिष्टों से युक्त एक संग्रहणीय संस्करण

आठ परिशिष्ट

१. प्रथम समुल्लास में आए ईश्वर के १०८ नामों की अकारादि क्रम से सूची।
२. सत्यार्थप्रकाश में व्याख्यात पारिभाषिक शब्दों की अकारादि क्रम से सूची।
३. सत्यार्थप्रकाश में निर्दिष्ट व्यक्तियों, स्थानादि की अकारादि क्रम से सूची।
४. सत्यार्थप्रकाश के १३वें समुल्लास में भाषा में निर्दिष्ट विभिन्न शब्दों का रोमन लिपि में निर्देश (जैसे हारून का Haron)।
५. चतुर्दश समुल्लास में उद्धृत कुरान की आयतों के अनुवाद के सम्बन्ध में पं० रामचन्द्र देहलवी का वक्तव्य।
६. सत्यार्थप्रकाश की आधार-ग्रन्थ-सूची।
७. सत्यार्थप्रकाश पर उठी शंकाओं का समाधान चतुर्वेद भाष्यकार पं० जयदेव विद्यालंकार द्वारा।
८. अन्त में अकारादि क्रम से प्रमाण-सूची।

विशेषताएँ

१. यह शताब्दी-संस्करण पं० भगवद्दत्त रिसर्च-स्कॉलर द्वारा महर्षि की मूल प्रति से सम्पादित है। सत्यार्थप्रकाश के इतिहास पर पं० भगवद्दत्त जी की एक विवेचनापूर्ण भूमिका इस शताब्दी-संस्करण में दी गई है।
२. प्रत्येक पृष्ठ के ऊपर उस पृष्ठ में आ रहे विषय का उल्लेख।
३. अनुच्छेदों (पैराग्राफ) पर क्रम-संख्या।
४. आरम्भ में एक विस्तृत विषय-सूची समुल्लास-अनुसार।

बढ़िया कागज। १६ प्वाइंट के मोनो टाइप में छपा। सुन्दर नयनाभिराम छपाई। मशीन द्वारा मजबूत जुजबन्दी की सिलाई। सम्पूर्ण कपडे की जिल्द। स्वर्णाक्षरों में पुस्तक का नाम। मूल्य २५·००

वैदिक सूक्ति-सुधा

वेद कठिन नहीं हैं, सरल हैं, यदि आप वेद पढ़ना चाहते हैं, वैदिक ज्ञान का रसास्वादन करना चाहते हैं, अपने पुत्र-पुत्रियों को वेद से परिचित कराना चाहते हैं तो स्वयं पढ़िये और अपने बच्चों के हाथ में इन ग्रन्थों को दीजिए—

यजुर्वेद सूक्ति-सुधा	१२.०० रुपये
सामवेद सूक्ति-सुधा	१०.०० ,,
अथर्ववेद सूक्ति-सुधा	१५.०० ,,
ऋग्वेद सूक्ति-सुधा	२५.०० ,,

सभी ग्रन्थों की छपाई अत्युत्तम है।
सभी पुस्तकों के व्याख्याता हैं आपके जाने-माने विद्वान्

परमहंस स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती

□

अन्त में ऐसी संकटपूर्ण स्थिति आ गयी कि उससे सेठजी को खाने-पीने-थूकने-बोलने में भी अति कष्ट होने लगा। एक दिन ओझाजी सेठजी के पास आये और बोले—"प्रयोग की समाप्ति का दिन आ गया है, सेठजी ! बलिदान की सामग्री प्रस्तुत करा दीजिए। प्रयोग-समाप्ति पर जब इधर विधिपूर्वक बलि दी जाएगी तो उधर उसी समय दयानन्द का सिर धड़ से कटकर भूमि पर गिर पड़ेगा।"

सेठजी ने बड़ी कठिनता से किसी तरह बोलते हुए कहा—"ओझा जी ! दयानन्द का सिर तो गिरते ही गिरेगा परन्तु मेरा तो अभी गिरा चाहता है, पीड़ा के कारण मेरे प्राण निकल रहे हैं। आप कृपा करके पुरश्चरण बन्द करा दीजिए।" इस पर पुरश्चरण बन्द हो गया।

९

मिर्जापुर की ही बात है कि एक समय एक उपद्रवी सरधना अपने सैकड़ों साथियों को साथ लेकर स्वामीजी के स्थान पर पहुँचा। वहाँ पहुँचकर वह सरधना स्वामीजी के पाँव-पर-पाँव धरकर बैठ गया। फिर ऊटपटाँग बकना और छेड़छाड़ करना प्रारम्भ किया। पास धरे बताशे खा-खाकर जूठे करने लगा। जब ऐसा करने से रोका, तो बोला—"बच्चा ! हमारी जूठन से घृणा करते हो। हम तेरे गुरु हैं। किंचित् ठहर। ले आज तुझे खण्डन का सारा स्वाद चखा देते हैं।"

स्वामीजी ने डाँटकर कहा—"तुम मुझे डराना चाहते हो। मैं यदि डरनेवाला होता तो देशान्तरों में घूमकर प्रचार कैसे कर सकता।" फिर अपने सेवक को कहा—"देखो बाहर के किवाड़ बन्द कर दो। मैं अकेला ही इन सबको सीधा करके छोड़ूँगा।"

स्वामीजी के प्रदीप्त नेत्रों को देखकर उस सरधने के होश उड़ गये और वह सीधा होकर पीछे हटकर बैठ गया और फिर कुछ नहीं बोला।

१०

एक समय स्वामीजी कर्णवास ठहरे हुए थे। उन दिनों गङ्गा-स्नान का महामेला था। बरौली के राव कर्णसिंह भी स्नान के लिए आये हुए थे। यहाँ राव की ससुराल भी थी। राव कट्टर वैष्णव थे और रंगाचार्यजी के चेले थे। ये स्वामीजी की कुटिया के बिलकुल समीप ही ठहरे हुए थे। एक रात उन्होंने अपने उतारे पर रासलीला का आयोजन किया। उसमें पधारने के लिए स्वामीजी महाराज को भी निमन्त्रित किया, परन्तु स्वामीजी ने रासलीलाओं को एक निन्दनीय कर्म बतलाते हुए उसमें आने में असमर्थता प्रकट की। उधर उन्हीं दिनों स्वामीजी वैष्णव सम्प्रदाय का खण्डन भी बहुत कर रहे थे। राव के बैठकबाजों ने वैष्णव-

चन्द्रगुप्त के महामन्त्री चाणक्य प्रणीत

चाणक्यनीतिदर्पणः

छपकर तैयार हो गया

भारतीय और पाश्चात्य सभी विद्वान् चाणक्यजी की कूटनीति का लोहा मानते हैं। चाणक्य नीति पर हिन्दी, गुजराती, बंगला, अंग्रेजी आदि भाषाओं में सैकड़ों टीकाएँ लिखी गई हैं परन्तु वे केवल संक्षिप्त भावार्थ मात्र हैं

इस महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ पर अबतक कोई विस्तृत भाष्य नहीं लिखा गया था।

आर्यजगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान्
स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती
ने इसपर भाष्य लिखकर इस कमी को पूरा कर दिया है

स्वामीजी द्वारा तैयार किये गये इस भाष्य की निम्न विशेषताएँ हैं—

१. प्रत्येक श्लोक का शब्दार्थ दिया गया है।

२. पाठ का निर्धारण करने के लिए लुड्विग द्वारा सम्पादित चाणक्यनीतिदर्पण की सहायता ली गई है। महत्त्वपूर्ण पाठ-भेदों को पादटिप्पणी में दर्शाया है।

३. धाराप्रवाही हिन्दी अनुवाद होने पर भी प्रत्येक श्लोक का भावार्थ दिया गया है।

४. प्रायः अधिकांश श्लोकों पर विमर्श लिखा गया है, जिनमें वेद, उपनिषद्, रामायण, महाभारत, मनुस्मृति आदि अनेक ग्रन्थों के उद्धरण दिये गये हैं।

५. प्रक्षिप्त श्लोकों का निर्देश कर दिया गया है।

६. बढ़िया कागज पर मोती जैसी छपाई है।

७. चाणक्यनीति के श्लोकों की अनुक्रमणिका दी गई है, जो अन्यत्र किसी पुस्तक में नहीं मिलेगी।

८. व्याख्या में उद्धृत सभी स्थलों की भी अनुक्रमणिका दी गई है।

आचार्य उदयवीरजी शास्त्री ने पुस्तक की पाण्डुलिपि का अवलोकन कर इस ग्रन्थरत्न की भूरि-भूरि प्रशंसा की है।

लगभग ३०० पृष्ठ के ग्रन्थ का मूल्य केवल ४०·०० ।

गोविन्दराम हासानन्द, दिल्ली-६

आलोचना को खूब बढ़ा-चढ़ाकर स्वामीजी के विरुद्ध कर्णसिंह को भड़काया। फिर क्या था ! अगले दिन सायंकाल राव साहब चमचमाती तलवार बाँधे हुए और इसी प्रकार तलवारों से लैस अन्य १०-१२ साथियों को साथ लेकर स्वामीजी के स्थान पर आ पहुँचे।

पहुँचते ही रास तथा वैष्णवमत सम्बन्धी प्रश्नोत्तर होने लगे, परन्तु कर्णसिंहजी तो प्रारम्भ से ही क्रोध में भरकर आये थे, इस प्रश्नोत्तर से उनका पारा और भी ज्यादा चढ़ गया। फिर क्या था, राव ने हाथ में तलवार लेकर स्वामीजी को अनेकानेक गालियाँ देना प्रारम्भ किया। स्वामीजी ने हँसते हुए कहा—"रावजी ! यदि शास्त्रार्थ करना अभीष्ट है तो कृपया वृन्दावन से अपने गुरु रंगाचार्यजी को बुला लीजिए। दोनों में से जो हार जाए, वह दूसरे के सिद्धान्त को स्वीकार करेगा यह प्रतिज्ञा हो जानी चाहिए।"

इसपर कर्णसिंह का पारा और तेज हुआ। आवेश में गालियों की धाराप्रवाह-वृष्टि और साथ ही तलवार का हवा को काटना जारी हुआ। तिस पर भी स्वामीजी मुस्कराते हुए बोले—"राव महाशय ! खड्ग का बारम्बार क्यों सञ्चालन करते हो। शास्त्रार्थ करना हो तो अपने गुरुजी को यहाँ ले आइए हम कटिबद्ध हैं, परन्तु, यदि आपको शस्त्रार्थ करने का चाव है तो संन्यासी से क्यों टकराते हो, जयपुर-जोधपुर में जा भिड़ो।"

फिर क्या था। कर्णसिंह आपे से बाहर हो गये, गालियाँ बरसाते हुए तलवार लिये स्वामीजी पर लपके। स्वामीजी ने 'अरे धूर्त' इतना कहते हुए राव को हाथ से ढकेल दिया। सँभलकर कर्णसिंह फिर तलवार का वार करने के लिए आगे बढ़े। राव तलवार चलाना ही चाहते थे कि स्वामीजी ने झपटकर उनके हाथ से तलवार छीन ली और भूमि पर टेककर बीच में से उसके दो टुकड़े कर दिये। फिर राव को कहा—"राव ! क्या तुम चाहते हो कि मैं भी आततायी पर प्रहार कर बदला लूँ ? मैं संन्यासी हूँ, तुम्हारे किसी भी अत्याचार से चिढ़कर मैं तुम्हारा अनिष्ट चिन्तन कभी न करूँगा। जाओ ईश्वर तुम्हें सुमति प्रदान करें।" इतना कहकर स्वामीजी ने तलवार के वे दोनों टुकड़े दूर फेंक दिये और राव को विदा किया।

जिस समय यह सब घटना घटी, उस समय लगभग ५० आदमी स्वामीजी के पास बैठे इस सब ताण्डव नृत्य को देख रहे थे। उन्होंने स्वामीजी से कहा—"महाराज ! पुलिस को इसकी सूचना देकर कर्ण-सिंह को दण्ड अवश्य दिलाना चाहिए।" स्वामीजी ने उत्तर दिया—

श्रीमद्वाल्मीकि रामायण

आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान्, निरन्तर साहित्य-साधना में संलग्न, रामायण के समालोचक एवं मर्मज्ञ

लेखक—स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती

- ☐ यदि आप अपने प्राचीन गौरवमय इतिहास की झाँकी देखना चाहते हैं,
- ☐ यदि आप मर्यादा पुरुषोत्तम राम के जीवन का अध्ययन करना चाहते हैं,
- ☐ यदि आप प्राचीन राज्य-व्यवस्था का स्वरूप देखना चाहते हैं,
- ☐ यदि आप रामायण के सम्बन्ध में प्रचलित भ्रान्त धारणाओं का समाधान पाना चाहते हैं,
- ☐ यदि आप भ्रातृ-प्रेम, नारी-गौरव, आदर्श सेवक, आदर्श मित्र, आदर्श राज्य, आदर्श पुत्र के स्वरूपों का अवलोकन करना चाहते हैं,
- ☐ यदि आप रामायण का तुलनात्मक अध्ययन करना चाहते हैं,

तो यह रामायण पढ़ जाइए। सैकड़ों टिप्पणियों से समलंकृत सम्पूर्ण रामायण ६००० श्लोकों में समाप्त। मूल्य रु० ८०.००

आचार्य शिवपूजनसिंह कुशवाहा लिखते हैं—

"सम्पादन और टीका-टिप्पणी लौह-लेखनीधारी स्वामी जगदीश्वरानन्द द्वारा हुई है। पं० आर्यमुनि, पं० राजाराम शास्त्री, पं० चन्द्रमणि विद्यालंकार ने भी रामायण की टीका क्षेपक-रहित प्रकाशित की थी। उनमें पादटिप्पणियों का अभाव था। इस टीका में टिप्पणियों की भरमार है जिनसे विषय का प्रतिपादन भलीभाँति हो जाता है।...स्वामी जगदीश्वरानन्द जी का परिश्रम, स्वाध्याय, विद्वत्ता प्रत्येक अध्याय में दृष्टिगोचर होते हैं।"

श्री अमर स्वामी जी महाराज (भूतपूर्व ठा० अमरसिंह जी महाराज) लिखते हैं—

"रामायण को देखकर ऐसा लगा कि इसमें कोई आवश्यक बात छूटी नहीं तथा कोई अनावश्यक और अनर्गल बात रहने नहीं पाई। टिप्पणियों तथा शंकाओं के समाधानों ने तो सोने में सुगन्ध उत्पन्न कर दी है।"

सत्यार्थ-सरस्वती

इसके संकलनकर्त्ता हैं पं० मदनमोहन जी विद्यासागर

ग्रन्थ में १४ प्रवाह हैं। आरम्भ के १० प्रवाह बहुत विस्तृत हैं। सत्यार्थप्रकाश के साथ ही अनेक बातों को महर्षि के अन्य ग्रन्थों से लेकर उस-उस विषय के साथ ग्रंथित कर दिया गया है। अनेक स्थानों पर नवीन प्रश्नोत्तर भी जोड़ दिये गये हैं; कठिन स्थलों को सरल बना दिया गया है। जो विषय यत्र-तत्र फैले हुए थे, उन्हें एक स्थान पर रख दिया गया है। अन्त में 'आर्योद्देश्य-रत्नमाला' भी संग्रहीत कर दी गई है। पुस्तक का कागज और छपाई उत्तम है। संकलन में परिश्रम किया गया है। मूल्य २५.००

"हम अभियोग कभी न चलाएंगे। हमारा धर्म तो सन्तोष करना है। यदि वह अपने क्षात्र-धर्म का पालन नहीं कर सका, तो हम अपने ब्राह्मण-धर्म से क्यों पतित हों। जो धर्म का हनन करता है, अन्त में उसका अपना हनन हो जाता है।"

११

संवत् १९२८ के कार्तिक मास में स्वामीजी कर्णवास में ठहरे हुए थे। उन्हीं दिनों बरौली के राव कर्णसिंह भी वहीं थे। राव ने एक दिन आधी रात के कुछ ही बाद अपने तीन नौकरों को लपलपाती तलवारें देकर स्वामीजी के वध के लिए भेजा। उस समय स्वामीजी वहाँ अकेले थे और तुर्यावस्था में समाधिस्थ बैठे थे। बधिक लोग स्वामीजी के समीप आये, परन्तु उनकी हिम्मत नहीं पड़ी कि वे उनपर तलवार का वार करें। उनके हाथ-पाँव फूल गये और वे हिम्मत हार वापस लौट आये। इसपर राव ने उन्हें खूब डाँट-फटकार दी और डरा-धमकाकर दुबारा स्वामीजी की हत्या के लिए भेजा। इस बीच स्वामीजी समाधि से उठ चुके थे। स्वामीजी की कुटिया राव के उतारे के ही समीप थी। राव ने जो-जो धमकियाँ अपने नौकरों को दीं, वे सब स्वामीजी ने भली प्रकार सुनीं, परन्तु दूसरी बार भी वे बधिक साहस-हीन होकर उलटे पाँव लौट आये। इस पर राव बहुत अधिक क्रोध में भर गये और उन नौकरों पर कठोरतापूर्वक वाग्वज्र के प्रहारों से बरस पड़े। इससे वे बधिक तलवारें चमचमाते हुए तीसरी बार जैसे-तैसे स्वामीजी के पास पहुँच गये। आततायियों को बिल्कुल समीप ही आते देख स्वामीजी खड़े हो गये और बड़े जोर से हुँकार-नाद गुँजाकर भूमि पर लात पटकी। वे तीनों-के-तीनों भयभीत होकर मूर्छित हो भूमि पर गिर पड़े और उनके हाथों से तलवारें छूट गयीं। बड़ी देर बाद उन्हें होश आया और वे सँभलकर वहाँ से भाग गये।

स्वामीजी के पास एक सेवक गाढ़ निद्रा में सोया हुआ था। स्वामी जी के घोर हुँकार-गर्जन से वह चौंककर उठा, और उस भयानक दृश्य को देखकर काँपता हुआ बोला—"महाराज! ये दुष्ट लोग कहीं फिर न आ जायें, इसलिए चलिए, कहीं ऊँचे-नीचे स्थान में छिपकर रात बिता लें। स्वामीजी ने—

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि, नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो, न शोषयति मारुतः॥

श्लोक उच्चारण करके कहा—"संन्यासीजन अपनी रक्षा निमित्त गढ़ और गुफा का आश्रय नहीं ढूँढ़ा करते। हमारा रक्षक तो केवल एक भक्त-

श्रीकृष्ण चरित

डा० भवानीलाल भारतीय, एम० ए०, पी-एच० डी०

धर्म-संस्कारक, स्वराज्य-स्रष्टा, निःस्पृह, परिव्राट्, विचक्षण राजनीतिज्ञ आदि गुणों से सम्पन्न महामानव योगिराज श्रीकृष्ण का आगमन इतिहास की एक अविस्मरणीय घटना है।

श्रीकृष्ण भारतीय संस्कृति के उन्नायक तथा स्रष्टा रहे हैं। उनको ठीक से समझना और अपनी परम्परा का ज्ञान प्राप्त करना आज के संक्रान्ति युग में अत्यन्त आवश्यक हो गया है।

श्रीकृष्ण के जीवन पर आलोचनात्मक पद्धति से महाभारत पर आधारित अनुसन्धानपूर्वक प्रकाश डालने वाली ऐसी अन्य पुस्तक अभी तक आपने नहीं देखी होगी।

हर राजनीतिज्ञ, समाज-सुधारक, विचारक, शिक्षक तथा मननशील पाठक के लिए आवश्यक पुस्तक।

डिमाई के २४० पृष्ठों की सजिल्द पुस्तक का मूल्य २५.०० मात्र

धर्म का स्वरूप

लेखक—प्रशान्त वेदालंकार

श्री स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती जी की सम्मति

प्रशान्त जी आर्य-साहित्य के सुलझे विचारक और चिन्तक हैं। 'धर्म का स्वरूप' पुस्तक उनकी प्रतिष्ठा के सर्वथा अनुरूप है···'धर्म की सार्वभौमिकता' अध्याय विचारपूर्ण और पठनीय है। योग्य लेखक ने साम्प्रदायिकता और धर्मनिरपेक्षता पर अपने विचार दिये हैं, जिसके सम्बन्ध में हम सब उलझ जाया करते हैं···देश का नेतृत्व करने वालों को प्रशान्त जी का दृष्टिकोण समझना चाहिये—मैं विचार स्वतन्त्रता का पक्षपाती हूँ और प्रशान्त जी के विचारों का स्वागत करता हूँ। आधुनिक समस्याओं के सन्दर्भ में डा० प्रशान्त की यह रचना सर्वथा अभिनन्दनीय है···। दयानन्द और आर्यसमाज को समझने में भी यह पुस्तक मूल्यवान सिद्ध होगी। आर्य जगत् को इस रचना का स्वागत करना चाहिये। मूल्य ३५.००

जीवन के पांच स्तम्भ

लेखक—प्रशान्त वेदालंकार

शिक्षा, धर्म, अर्थ, समाज, राजनीति का महर्षि दयानन्द के दृष्टिकोण का आधुनिक परिपेक्ष्य में अनुशीलन। मूल्य : ३५.००

वत्सल भगवान् ही है। तुम्हें घबराना नहीं चाहिए। हम चाहें तो उन्हीं से शस्त्रों को छीनकर उन्हें सीधा कर सकते हैं।"

दिन निकलते ही राव की क्रूरता का समाचार नगर में बिजली के समान फैल गया। उन दिनों राजघाट पर पंजाबी सेना की एक टुकड़ी पड़ी हुई थी। इस दुर्घटना को सुनकर सैनिकों के आवेश का पारा उच्चतम शिखर पर चढ़ गया। पच्चीस वीर शस्त्र बाँधे हुए स्वामीजी के पास आ पहुँचे और हाथ जोड़कर कहने लगे—"सन्तजी महाराज! हमें एक बार आज्ञा दीजिये। फिर देखिये, हम आप जैसे साधु-सन्तों के दुश्मनों को कैसा मजा चखाते हैं। इस कार्य से चाहे हमारी नौकरी भी क्यों न चली जाए, परन्तु उन दुष्टों को तो पार लगा के ही लौटेंगे।" स्वामीजी ने अपने सदुपदेशों द्वारा उनके खौलते खून को शान्त किया एवं वे सैनिक शान्त होकर अपने स्थान पर लौट गये।

इस प्रकार दया में आनन्द लेनेवाले संन्यासी के दरबार से तो क्रूर कर्णसिंह बच गये, परन्तु भगवान् की अन्तिम अदालत से तो कोई अनिष्टकारी नहीं बच पाता। इस अदालत से तो चुपके से मिले दण्ड को अवश्यमेव भुगतना ही पड़ता है। एक ओर तो राव कर्णसिंह कर्णवास से अपने घर जाते ही इतने अधिक रुग्ण हो गये कि उनकी दशा उन्मत्त की-सी आजन्म हो गयी, और दूसरी ओर उनका ५० हजार का एक मुकद्दमा जो इलाहाबाद में कई दिनों से चल रहा था, उसमें भी वे हार गये।

१२

भाद्रपद संवत् १९३६ में स्वामीजी बरेली ठहरे हुए थे। वहाँ उनके व्याख्यानों में पादरी, कलक्टर, कमिश्नर, युरोपियन आदि सभी आया करते थे। एक दिन स्वामीजी ने अपने व्याख्यानों में पुराणों की समालोचना की। उसे सुनकर कमिश्नर, कलक्टर आदि खूब खिल-खिलाकर हँसे। परन्तु ज्यों ही थोड़ी देर के बाद ईसाई मत की बारी आयी, तो उनकी समालोचना सुनकर कमिश्नर साहब का चेहरा कोपावेश से तमतमा उठा। अगले ही दिन सेठ लक्ष्मीनारायणजी के पास, जिनकी कोठी पर स्वामीजी ठहरे हुए थे, कमिश्नर साहब का बुलावा पहुँच गया। सेठ जी को बुलाकर कमिश्नर ने कहा—"आप पण्डितजी को कह दीजिये, अधिक कठोर खण्डन न करें, अन्यथा उनके व्याख्यान बन्द कर दिये जायेंगे।"

स्वामीजी को जैसे-तैसे यह सन्देश मिल गया। अगले ही दिन स्वामीजी ने अपना व्याख्यान सिंह-गर्जना के साथ प्रारम्भ किया—"लोग

पं० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार की तीन पुस्तकें

भूतपूर्व संसद्-सदस्य तथा उपकुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
द्वारा रचित एक नई संशोधित अनूठी कृति—

वैदिक विचारधारा का वैज्ञानिक आधार

मूल्य ५०.००

निम्न विषयों को लेखक ने सरल भाषा में समझाया है :

१. मन (भौतिकवादी दृष्टिकोण), २. मन (आध्यात्मिक दृष्टिकोण), ३. चेतना, मन तथा आत्मा, ४. चेतना, ५. ईश्वर, ६. सृष्ट्युत्पत्ति, ७. कर्म, ८. निष्काम कर्म, ९. शिक्षा, १०. जीवन, ११. पुनर्जन्म, १२. मृत्यु।

इस पुस्तक पर लेखक को निम्नलिखित पुरस्कार मिले हैं—

१०,००० रुपये भारतीय विद्याभवन का राजाजी स्मृति पुरस्कार।
११०० रुपये रामकृष्ण हजारीमल डालमिया पुरस्कार।
१२०० रुपये गंगाप्रसाद उपाध्याय पुरस्कार।
२५०० रुपये उत्तरप्रदेश सरकार पुरस्कार।

□

वैदिक संस्कृति का सन्देश

प्रो० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार की एक नवीनतम पुस्तक

मूल्य ३५.००

विषय-सूची

१. मनुष्य या मशीन, २. आत्मा के दर्शन तथा आत्मा का स्थान, ३. आत्म-समर्पण, ४. वैदिक संस्कृति का समन्वयात्मक दृष्टिकोण, ५. वैदिक संस्कृति का यथार्थ-वाद, ६. उपनिषद् की दृष्टि में विद्या क्या है, अविद्या क्या है, ७. वैदिक संस्कृति के पाँच आधार-स्तम्भ (ऋषियों की खोज), ८. मन की चुलबुलाहट, ९. गीता का निष्काम-कर्म, १०. गायत्री मन्त्र का रहस्य—गायत्री मन्त्र की मौलिक व्याख्या, ११. संस्कारों का महत्त्व—मानव के नवनिर्माण की योजना, १२. बृहत्तर भारत—विदेशों में भारतीय संस्कृति (प्रथम भाग), १३. बृहत्तर भारत—रामायण तथा उपनिवेश (द्वितीय भाग), १४. बृहत्तर भारत—भारत की सांस्कृतिक विजय (तृतीय भाग), १५. सायण, महीधर, मैक्समूलर, मैकडॉनल व ऋषि दयानन्द की वेदार्थ-शैली, १६. धर्मों का आदि-स्रोत—वेद हैं, १७. विश्व-शान्ति की समस्या में वैदिक दृष्टिकोण, १८. सत्यार्थप्रकाश, १९. सामाजिक समस्याएँ, २०. वैदिक वर्ण-व्यवस्था तथा साम्यवाद, २१. वैदिक संस्कृति की आज के युग को चुनौती। □

ब्रह्मचर्य सन्देश १५.००

कहते हैं सत्य का प्रकाश न कीजिए क्योंकि कलक्टर कुपित हो जाएगा, कमिश्नर प्रसन्न नहीं रहेगा, गवर्नर पीड़ा पहुँचाएगा। अरे! चाहे चक्रवर्ती राजा भी अप्रसन्न क्यों न हो जाए हम तो सत्य ही कहेंगे। आत्मा सत्य है। उसको सत्ता को न कोई शस्त्र छेदन कर सकता है, और न अग्नि जला सकता है। वह एक अजर-अमर अविनाशी पदार्थ है। शरीर तो अवश्य नाशवान् है, जिसका जी चाहे इसका नाश कर दे। परन्तु हम देह की रक्षा के लिए सनातन धर्म को नहीं त्यागेंगे—सत्य को नहीं छोड़ेंगे। वह शूरवीर पुरुष मुझे दिखलाइए जो मेरे अन्तरात्मा को छिन्न-भिन्न करने का घमण्ड करता हो। जबतक ऐसा पुरुष दृष्टिगोचर नहीं होता। दयानन्द के लिए सत्य में सन्देह करना स्वप्न में भी असंभव है।"

स्वामीजी के व्याख्यानों में पादरी स्काट नियमपूर्वक आया करते थे, परन्तु उस दिन वे नहीं आये। व्याख्यान-समाप्ति पर पूछने पर स्वामीजी को विदित हुआ कि रविवार के कारण वे गिर्जा गये हुए हैं। स्वामीजी सीधे गिर्जा की ओर चल पड़े। तीन-चार-सौ अन्य मनुष्य भी पीछे-पीछे हो लिये। वहाँ पहुँचने पर स्काट महाशय तत्काल वेदी से नीचे उतरे और आगे बढ़कर स्वामीजी को, उपदेश देने के लिए विनयपूर्वक वेदी पर ले आये। स्वामीजी ने उस वेदी पर घंटाभर उपदेश दिया और मनुष्यों को ईश्वर मानकर पूजने में अनेक दोष दर्शाये।

१३

फर्रुखाबाद की घटना है। स्वामीजी महाराज अपने स्थान पर विराजमान थे। बीस-पच्चीस दुर्जन स्वामीजी का वध करने के लिए उनके डेरे पर आ पहुँचे, परन्तु वे आततायी लोग उनके भव्य डील-डौल और आँखों में चमकती हुई दिव्य ज्योति को देखकर भयभीत हो गये और स्वामीजी के प्रबल प्रताप से कम्पायमान होकर उलटे पाँव लौट आये। शीघ्र ही स्वामीजी के एक भक्त को इस आक्रमण का समाचार मिला। वह स्वामीजी की रक्षा के लिए कुछ बलिष्ठ वीरों को साथ लेकर वहाँ पहुँच गये, परन्तु आक्रमणकारी तो पहले ही वहाँ से चम्पत हो चुके थे। भक्त ने महाराज से कहा—"गुरुदेव! आप हमारे भीतर के स्थान में चलकर रहिए ताकि कोई उपद्रवी आपपर आक्रमण न करे।" स्वामीजी ने कहा—"महाशयजी! यहाँ तो इस प्रकार आप मेरी रक्षा कर लेंगे, परन्तु अन्यत्र कौन करेगा? मेरी रक्षा तो सर्वत्र परमात्मदेव ही करते हैं, इसलिए मैं सर्वथा निर्भय हूँ।" एवं स्वामीजी भीतर के स्थान में नहीं गये, अपितु वहीं आसन जमाये रहे।

जब प्रकृति की अनमोल दवाइयाँ आपको आसानी से उपलब्ध हैं तो—

गोली
पुड़िया
कैप्सूल
या
इन्जेक्शन
की
क्या जरूरत है ?

फल-फूल, कन्द-मूल, पत्ता-पत्ता, बूटा-बूटा अपने आप में दवा भी है दवा-खाना भी। आयुर्विज्ञान में इन सभी को मृत्युञ्जय माना है। इन सभी में इतनी शक्ति है कि बूढ़े को जवान बना दे, पके बाल काले कर दे, बुढ़ापे की झुर्रियाँ मिटा दे।

१.	घर का वैद्य आंवला	३.५०	११.	घर का वैद्य दूध-घी	३.५०
२.	घर का वैद्य नीम	३.५०	१२.	घर का वैद्य दही-मट्ठा	३.५०
३.	घर का वैद्य गन्ना	३.५०	१३.	घर का वैद्य नमक	३.५०
४.	घर का वैद्य प्याज	३.५०	१४.	घर का वैद्य हल्दी	३.५०
५.	घर का वैद्य लहसुन	३.५०	१५.	घर का वैद्य हींग	३.५०
६.	घर का वैद्य नीबू	३.५०	१६.	घर का वैद्य बेल	३.५०
७.	घर का वैद्य तुलसी	३.५०	१७.	घर का वैद्य बरगद	३.५०
८.	घर का वैद्य पीपल	३.५०	१८.	घर का वैद्य मूली	३.५०
९.	घर का वैद्य आक	३.५०	१९.	घर का वैद्य गाजर	३.५०
१०.	घर का वैद्य सिरस	३.५०	२०.	घर का वैद्य अदरक	३.५०

सुखी बसे संसार सब, रोगी रहे न कोय।
घर का वैद्य हो पास जब, स्वस्थ रहे सब कोय ॥

गोविन्दराम हासानन्द, नई सड़क, दिल्ली-११०००६

१४

फर्रुखाबाद में एक विशाल सभा जमी हुई है। सहस्रों श्रोता नर-नारी एकटक कान लगाये और एक भव्य मूर्ति की ओर आँखें लगाए शान्तभाव से बैठे हुए हैं। स्वामीजी का उपदेशामृत प्रवाह गम्भीर भाव से चल रहा है। बीच-बीच में प्रश्नोत्तर भी हो रहे हैं। इतने में एक मद्य से उन्मत्त ब्राह्मण बीच में से उठा और स्वामीजी पर जूता फेंका। जूता तो स्वामीजी तक नहीं पहुँचा, बीच में ही गिर पड़ा, परन्तु जन-समूह प्रबल वेग से तरंगित हो उठा। सभा में बैठे हुए सत्यनामिए साधुओं की आँखों में खून उतर आया। उनका उतरा हुआ खून उस दुर्जन को दण्ड देकर ही वापस होना चाहता था। वे उसे पकड़कर पीटने लगे। स्वामीजी ने उन साधुओं को रोकते हुए कहा—"इसकी चेष्टा से हमें कोई दुःख नहीं हुआ। और यदि जूता लग भी जाता तो कौन-सा राम-बाण था। इसने जो कुछ किया है, अज्ञान और सुरा के वशीभूत होकर किया है। इसलिए इस पर दया करो और इसे छोड़ दो।" इस पर साधुओं ने उसे छोड़ दिया।

१५

फर्रुखाबाद में स्वामीजी पधारे हुए थे। कुछ उपद्रव-कारियों ने एक गुण्डे लठैत को बहुत-सा धन देकर इस बात के लिए तैयार किया कि वह स्वामीजी का काम तमाम कर दे। निश्चयानुसार वह स्वामीजी के स्थान पर पहुँचा। उस लठैत ने हाथ में एक मोटा लट्ठ उठाया हुआ था। पहुँचते ही वह कड़ककर स्वामीजी से बोला—"बाबा, क्या तुम मूर्ति को ईश्वर नहीं मानते हो।"

स्वामीजी ने उत्तर दिया—"भद्र! तुम जानते हो, ईश्वर का स्वरूप क्या है?" वह बोला—"हाँ मैं जानता हूँ, ईश्वर सच्चिदानन्द सर्वशक्तिमान है, भक्त-वत्सल दयालु देव है, और सर्वत्र परिपूर्ण है।"

तब स्वामीजी ने मुस्कराकर कहा—"भद्र! ईश्वर के जो गुण तुमने कथन किये हैं, वे सब सत्य हैं। तुम्हारी इस समझ की मैं प्रशंसा करता हूँ। परन्तु, अब तुम ही इन वर्णित ईश्वरीय गुणों को मन्दिर की मूर्तियों के गुणों के साथ मिलाओ। यदि न मिलें तो तुम्हें भी वही मानना चाहिए जिसकी साक्षी तुम्हारी आत्मा देता है।"

समझाने के इस ढंग से उसका चित्त पिघल गया। उसने लट्ठ फेंक दिया और श्रीचरणों में गिर पड़ा। उस दिन से उसकी काया ही पलट गयी और वह सत्य का पुजारी बन गया।

१६

फर्रुखाबाद की ही बात है। स्वामीजी गंगा में पाँव फैलाए पड़े थे। कुछ-एक लड़के उधर आ निकले। उन्होंने साधु को देखकर आपस में कहा, देखो, यह कितना मोटा साधु है। लड़कों को मोटे साधु को सताने की एक शरारत सूझी। उन्होंने गीले रेत के गोले बना-बनाकर स्वामीजी पर मारने प्रारम्भ किये। बहुत देर तक लड़कों की यह शरारत चलती रही और स्वामीजी चुपचाप देखते रहे। परन्तु जब बालु-कण आँखों में भी पड़ने लगे, तो वे उस स्थान से उठकर चल दिये, परन्तु लड़कों को कुछ नहीं कहा।

१७

फर्रुखाबाद में स्वामीजी को सत्य-अहिंसा के तेजस्वी प्रयोग करने के अनेक अवसर मिले। वहाँ एक दिन प्रभात वेला में स्वामीजी भ्रमणार्थ बाहर निकले। भ्रमण मार्ग में एक दुर्जन आ खड़ा हुआ और स्वामीजी पर गालियों की वर्षा प्रारम्भ की। साथ-ही-साथ यह भी कहा, तू तो ईसाइयों का नौकर है हमें ईसाई बनाना चाहता है, परन्तु स्वामीजी सब सुनते रहे और मौन धारण किये हुए मुसकराते रहे। नित्य नियम के अनुसार अपना भ्रमण समाप्त किया और निवास स्थान पर लौट आये। परन्तु उस भूले-भटके मनुष्य ने फिर भी स्वामीजी का पीछा नहीं छोड़ा। वह सताने के लिए तो तुला ही हुआ था, इसलिए स्वामीजी के डेरे पर आ पहुँचा। डेरे पर पहुँचने पर स्वामीजी ने उसका स्वागत सत्कार करते हुए कहा—"आइए, बैठिए, आने का कैसे कष्ट किया?"—इस प्रकार स्वामीजी का प्रेमालाप करना था कि वह सताने की इच्छा से आया हुआ, एकदम बदल गया और उसका दिल मोम की तरह पिघलकर द्रवीभूत हो गया। उसके दोनों नेत्रों से गंगा-यमुना नदियाँ बहने लगीं और वह क्षमा-याचना के लिए स्वामीजी के चरणों में लोटने लगा। स्वामीजी ने उसे धीरज बँधाते हुए कहा—"प्यारे! शब्द आकाश में उत्पन्न होकर वहीं लीन हो जाता है, इसलिए तुम्हारे वे कटु वचन भी नष्ट हो गये हैं। वे मेरे पास नहीं हैं, उन्होंने मुझे स्पर्श तक नहीं किया, इसी कारण उनसे मुझे कुछ भी दुःख नहीं हुआ।" इस घटना से उसका जीवन ही पलट गया और आगे से सत्य-अहिंसा का एक खोजी बन गया।

१८

संवत् १९३७ के वैशाख मास में स्वामीजी का फिर फर्रुखाबाद आना हुआ। आने पर उन्हें समाचार सुनाया गया कि एक आर्य-सभासद को कुछ एक उद्दण्ड मनुष्यों ने मिलकर खूब पीटा। मि० स्काट की अदा-

लत में फौजदारी मुकद्दमा चला और अपराधियों को दण्ड दिया गया। इसपर स्वामीजी ने आर्य पुरुषों को चेतावनी दी—"आर्यो! हमने लोगों के कठोर हृदयों को कोमल बनाना है, दूर भागतों को आकर्षित करना है। यदि वे अत्याचार भी करें, तो अपने उदात्त उद्देश्य को दृष्टि में रखते हुए हमें तो उनसे प्रेम ही करना चाहिए। धर्म के नाम से बदला लेने की भावना सर्वथा अभद्र है।"

उधर स्काट महाशय भी स्वामीजी से यदा-कदा मिलने के लिए आया करते थे। स्वामीजी के फर्रुखाबाद पहुँचने पर वे भी उनके समीप आये। वार्तालाप के प्रसंग में उन्होंने भी स्वामीजी को उक्त घटना सुनाते हुए कहा—"महाराज! आपके सेवक को पीटनेवाले दुष्ट जनों को उचित दण्ड दे दिया गया है।" स्वामीजी ने उत्तर में कहा—"महाशय! संन्यासी लोग तो अपने प्राणघातक को भी पीड़ा पहुँचते देखकर प्रसन्न नहीं होते। इस आश्रम में अपने-पराये सब एक-समान समझे जाते हैं।"

स्वामीजी के इस उत्तर को सुनकर स्काट महाशय अत्यन्त प्रभावित हुए।

१९

संवत् १९३७ के आश्विन मास में स्वामीजी मेरठ से देहरादून में पधार रहे थे। मार्ग में सहारनपुर के रेलवे स्टेशन पर अनेक भक्त लोग स्वामीजी के स्वागत-सत्कार के लिए जमा थे। उन्होंने स्वामीजी को सूचित किया—"महाराज! आपको जैन लोग कैदखाने में डलवाने का षड्यन्त्र रच रहे हैं।"

स्वामीजी ने निर्भयतापूर्वक उत्तर दिया—"भाई! सोने को जितना तपाया जाता है उतना ही कुन्दन बनता है। विरोध की आँच से सत्य कान्ति चौगुनी चमकती है। दयानन्द को तो यदि कोई तोप के मुँह के आगे रखकर भी पूछेगा कि बता सत्य क्या है, तब भी उसके मुख से वेद की श्रुति ही निकलेगी। अब तो मैंने जैन मत के बहुत-से ग्रन्थ देख लिए हैं। वे लोग मेरे प्रश्नों का समाधान कदापि नहीं कर सकते।"

पर्व २—पंजाब में

२०

अमृतसर में स्वामीजी ठहरे थे। वहाँ रात्रि के समय उनके व्याख्यान हुआ करते थे। व्याख्यान रात्रि के आठ बजे समाप्त हो जाता था। एक

दिन एक अध्यापक ने छोटे-छोटे विद्यार्थियों को कहा—"देखो आज हम सब साधु की कथा में चलेंगे। तुम चलते समय अपनी-अपनी झोलियों में ईंटों के रोड़े भर लेना वहाँ जब इशारा करूँ, तुम तत्काल कथा कहने वाले साधु पर इन रोड़ों को फेंकने लग जाना। देखो, खूब अच्छी तरह तड़ातड़ रोड़े बरसाना, मैं तुम्हें लड्डू दूँगा।"

वे बालक अबोध तो थे ही, फिर गुरुजी की आज्ञा थी। उन्होंने गुरुजी की आज्ञानुसार अपनी झोलियों में रोड़े भर लिए और व्याख्यान स्थली में आ पहुँचे। अभी कुछ-कुछ अन्धेरा हुआ था कि अध्यापक ने इशारा किया और उन बालकों ने स्वामीजी पर कंकड़ बरसाने प्रारम्भ कर दिये। एक बार तो समस्त सभा चलायमान हो गयी, परन्तु स्वामीजी ने उसे तुरन्त शान्त कर दिया।

पुलिस कर्मचारियों ने उन उपद्रवी लड़कों में से कुछ-एक को पकड़ लिया और व्याख्यान की समाप्ति पर स्वामीजी के सामने ला उपस्थित किया। पुलिस के हाथ पड़े हुए वे बालक चिल्लाने और फूट-फूटकर रोने लगे। स्वामीजी ने उनको तसल्ली दी और ईंट मारने का कारण पूछा। वे हिचकियाँ लेते हुए फूट पड़े—"स्वामीजी! हमें तो पण्डितजी ने कहा था कि झोली में रोड़े भर ले जाओ, जब मैं इशारा करूँ तब व्याख्यान देनेवाले साधु पर बरसाने लग जाना, मैं तुम्हें लड्डू दूँगा।" स्वामीजी ने तत्काल लड्डू मँगवाये और बालकों को कहा—"विद्यार्थियो! तुम्हारे अध्यापक तो सम्भव है तुम्हे लड्डू न दें, लो मैं तुम्हें दिये देता हूँ"—ऐसा कहकर स्वामीजी ने उन बालकों को अपने हाथ से लड्डू बाँटे और उन्हें पुलिस के पंजे से छुड़ाकर अपने-अपने घर भेज दिया।

२१

अमृतसर की ही घटना है। वहाँ के पण्डितों से स्वामीजी का शस्त्रार्थ निश्चित हुआ। शास्त्रार्थ का जो समय नियत हुआ था तदनुसार नियत समय पर स्वामीजी तो सभास्थल में आ पहुँचे, परन्तु पण्डित लोग नहीं पधारे। बहुत देर तक प्रतीक्षा करने के पश्चात् सात-आठ पण्डित आये और स्वामीजी के सम्मुख बैठ गये। इतने में ही उनके चेले-चाटों ने चारों ओर से स्वामीजी पर ईंट-पत्थर बरसाना और राख-धूल फेंकना प्रारम्भ कर दिया। स्वामी के भक्तों में बड़ा भारी विक्षोभ फैल गया। पुलिस प्रबन्ध के लिए आगे बढ़ी। पण्डित लोग एक-एक करके वहाँ से खिसक गये, परन्तु भक्त लोग अपराधियों को बिना दण्ड दिलाये शान्त नहीं हो रहे थे। इस पर स्वामीजी ने उस विक्षुब्ध जनता को शान्त करते

हुए कहा—"भद्रजनो! मद्य-मदिरा से उन्मत्त जनों पर कोप नहीं करना चाहिये। हमारा काम एक वैद्य का है। उन्मत्त मनुष्य की चिकित्सा के लिए वैद्य उसे औषध देता है, उसकी लीला पर उसे मार-पीट नहीं करता। निश्चय जानिए, आज जो लोग मुझपर ईंट-पत्थर और धूल बरसा रहे हैं, वे ही मेरे पीछे कभी आप लोगों पर पुष्प-वर्षा किया करेंगे।"

तत्पश्चात् स्वामीजी अपने डेरे की ओर चल पड़े। पीछे-पीछे कुछ-एक भक्तजन भी हो लिये। डेरे पर पहुँचने पर एक भक्त ने स्वामीजी से कहा—"स्वामीजी! आज दुष्ट लोगों ने आने पर बहुत राख-धूल फेंकी और आपका घोर अपमान किया।" उत्तर में स्वामीजी ने कहा—"परोपकार और पर-हित करते समय अपने मान-अपमान और परनिन्दा का परित्याग करना ही पड़ता है। इसके बिना सुधार नहीं हो सकता। मैंने आर्यसमाज का उद्यान लगाया है अतः मेरी अवस्था एक माली की है। पौधों में खाद डालते समय राख-मिट्टी माली के सिर पर भी पड़ जाया करती है। मुझपर राख-धूल चाहे कितनी पड़े मुझे इसकी कुछ भी चिन्ता नहीं, परन्तु वाटिका हरी-भरी बनी रहे और निर्विघ्न फूले-फले।"

ओह! स्वामीजी के दिल में पर-हित के लिए कितनी कसक थी। आर्यसमाज से उन्हें क्या आशा थी। क्या आर्यसमाज के संचालक अपने आचार्य की तड़पन को सुनेंगे!

२२

अमृतसर की ही एक और घटना है। स्वामीजी के सत्य-कथन को न सह सकनेवाले लोग उनके शत्रु बने हुए थे। स्वामीजी के भक्तों को स्वामीजी पर घातक प्रहार होने का खटका था। अतः स्वामीजी की रक्षा के लिए कुछ-एक भक्तजन रात्रि काल में उन्हीं के डेरे पर सोया करते थे। एक दिन एक भक्त ने कहीं स्वामीजी को कह दिया कि आपने जो सिक्ख पन्थ पर आक्षेप किये हैं, उससे चिढ़कर कुछ निहंग आपके वध के लिए तुले बैठे हैं, रात को आपके समीप कुछ आर्य सोते हैं, अतः निहंगों का दाव नहीं चल रहा।

यह सुनकर स्वामीजी ने उसी दिन से वहाँ आर्यों का सोना बन्द कर दिया और कहा—"हम अकेले ही रहेंगे। जिसकी आज्ञा का मैं पालन कर रहा हूँ, वही परमेश्वर मेरा रक्षक है।"

२३

संवत् १९३४ के अन्त में स्वामीजी वजीराबाद पधारे हुए थे। वहाँ स्वामीजी का एक पण्डित से शास्त्रार्थ हो रहा था। पण्डित-मंडली

ने पहले ही एक योजना बना रखी थी, कि किस प्रकार उपद्रव किया जाएगा। शास्त्रार्थ में पण्डितजी निरुत्तर हो गये। उन्होंने पूर्व निश्चित योजना के अनुसार कुछ गड़बड़ की, और एक छोकरे ने सीटी बजाना प्रारम्भ किया। प्रधान ने उस युवक को डाँटकर सीटी बजाने से रोका, परन्तु वहाँ तो कुछ और ही मनोरथ बँधे हुए थे। एकदम पण्डितजी और हुल्लड़बाज स्वामीजी पर टूट पड़े। ज्यों-त्यों करके स्वामीजी अपने डेरे पर आ गये, परन्तु उपद्रवियों ने फिर भी पीछा न छोड़ा। उन्होंने स्वामीजी पर ईंट-पत्थर बरसाने में सावन-भादों की झड़ी लगा दी। स्वामीजी किवाड़ बन्द करके भीतर बैठ गये और उन लोगों की अज्ञानता पर हँसने लगे।

स्वामीजी का एक कर्मचारी पीछे रह गया। उपद्रवियों ने उसे पकड़ कर बहुत बुरी तरह पीटा। स्वामीजी को उसके इस प्रकार पिटने का समाचार मिला। वे उसे छुड़ाने के लिए बाहर निकले और केसरी की भाँति गरजते हुए ललकारा। इस उच्च गर्जना से भयभीत होकर सब-के-सब उपद्रवी भाग निकले और कर्मचारी की रक्षा हो सकी।

पर्व ३—बम्बई, बंगाल में

२४

बम्बई की बात है कि खण्डन से चिढ़कर कुछ-एक वैष्णवों ने स्वामी जी को मार डालने की ठानी। उन्होंने स्वामीजी के सेवक को अपने पास बुलाया और लालच देकर कहा—"यदि तुम विष देकर दयानन्द की समाप्ति कर दो, तो हम तुम्हें एक सहस्र रुपये देंगे।" सेवक लालच में फँस गया। एक सहस्र रुपये देने का प्रोनोट लिख दिया गया और उसे समुत्तेजित करने के लिए प्रसन्नता के रूप में पाँच रुपये तथा पाँच सेर मिठाई उसी समय भेंट कर दी गयी। ज्यों ही सेवक लौटकर डेरे पर आया, स्वामीजी ने प्राज्ञ-नेत्रों से गुप्त भेद को ताड़कर उससे पूछा—"क्या तुम आज गोकुलियों के यहाँ गये थे?" उत्तर 'हाँ' में मिलने पर दुबारा प्रश्न किया—"देखो, सच-सच बताना, वहाँ क्या ठहरा कर आये हो।"

अब सेवक भेद को छिपा न सका, उसने सब-कुछ सही-सही स्वामी-जी को बतला दिया। इसपर स्वामीजी ने सेवक को समझाते हुए कहा—"देखो, जिसे परमेश्वर न मारे उसे मारने के लिए कोई भी समर्थ नहीं हो सकता। बनारस में मुझे हलाहल विष दिया गया, राव कर्णसिंह ने पान में विष दिलाया, अन्य भी अनेक स्थानों में मुझ पर विष के विषम

प्रयोग किये गये, परन्तु मेरा प्राणान्त नहीं हुआ। स्मरण रखो, अब भी मैं मारा नहीं जाऊँगा।"

स्वामीजी के प्रेमरस-परिपूर्ण वचनों को सुनकर सेवक पानी-पानी हो गया। स्वामीजी के चरणों में गिरकर क्षमा-याचना की और प्रतिज्ञा की कि अब कभी ऐसे निन्दनीय दाँव-पेचों में न आऊँगा।

२५

बम्बई में स्वामीजी पधारे हुए थे। एक दिन रात के समय दो हृष्ट पुष्ट बलिष्ठ मनुष्य स्वामीजी के वध के लिए चुपचाप मकान के अन्दर घुस आये। स्वामीजी की दृष्टि उन छिपे हुए हत्यारों के ऊपर पड़ गयी। वे उनके मनोभाव को ताड़ गये। उन्होंने गरजकर पूछा—"तुम कौन हो?" वे स्वामीजी की गर्जना से भयभीत और कम्पायमान हो गये। बिना कुछ कहे-सुने एकदम भाग गये।

२६

बम्बई की ही तीसरी घटना है। एक दिन एक पन्थाई ने चार बलवान् मनुष्यों को स्वामीजी के वध के लिए तैयार किया। स्वामीजी प्रतिदिन प्रातःकाल समुद्र-तट की ओर भ्रमणार्थ जाया करते थे। स्वामीजी के वध की ताक में उसी ओर नित्यप्रति नियमपूर्वक वे चारों हत्यारे भी घूमने के लिए जाने लगे। एक दिन स्वामीजी ने इस कुचक्र को ताड़ लिया। वे चलते-चलते एकदम खड़े हो गये और पीछा करने वालों से कहा—"क्या तुम मेरा हनन करना चाहते हो?" स्वामीजी की इस गर्जना और उनके प्रदीप्त नेत्र-तेज को देखकर वे एकदम सहम गये और फिर कभी उनका पीछा नहीं किया।

२७

सूरत में स्वामीजी की व्याख्यान-माला चल रही थी। उस दिन स्वामीजी का तीसरा भाषण था। व्याख्यान में ही एक पण्डितजी खड़े हो गये और मूर्ति-पूजन के सम्बन्ध में प्रश्नोत्तर करने लगे। परन्तु वे शीघ्र ही थरथरा गये और आगे न बोल सके। साम्प्रदायिक लोग उबल पड़े। उन्होंने कोलाहल मचा दिया और स्वामीजी पर ईंट-पत्थर-धूल बरसाना प्रारम्भ किया। सहायकों ने विनय की—"महाराज ये लोग बड़ा उत्पात मचा रहे हैं, कृपया अब व्याख्यान बन्द कर दीजिये।" स्वामीजी ने कहा—"भद्रजनो! अपने भाइयों द्वारा फेंके हुए ईंट-पत्थर मेरे लिए पुष्पों की वर्षा है। व्याख्यान तो मैं समय पर ही समाप्त करूँगा।" इतना कहकर स्वामीजी ने नियत समय तक अपना भाषण जारी रखा और फिर कुछ उपद्रव नहीं हुआ।

२८

सूरत के बाद स्वामीजी भड़ौंच पधारे। वहाँ उन्होंने नर्मदा-तट पर भृगु आश्रम में आसन जमाया। भड़ौंच में व्याख्यान-माला प्रारम्भ हो गयी। उन्हीं दिनों एक दक्षिणी पण्डितजी भी अपने अनेक शिष्यों सहित भड़ौंच में रह रहे थे। सायंकाल के समय स्वामीजी व्याख्यान दे रहे थे। वे पण्डितजी भी अपने दल-बल सहित आ पहुँचे। उन्होंने तर्जनी अंगुली से तर्जना करते हुए स्वामीजी के प्रति अनेकानेक कठोर शब्दों का प्रयोग करना प्रारम्भ किया। स्वामीजी के एक भक्त इस दुर्व्यवहार को न सह सके। उन्होंने दाँत पीसते हुए कहा—"भलमनसी से अब भी टल जा, नहीं तो तेरी कपाल-क्रिया अभी किये देता हूँ। यदि तूने स्वामीजी की ओर अंगुली भी उठायी, तो तेरी हड्डी-पसली एक कर दूँगा।"

इस पर स्वामीजी ने कहा—"बलदेव! कोप किस पर करते हो? ये तो हमारे भाई हैं। इन्हीं की कल्याण-कामना करते रात-दिन बीतते हैं। बलदेव! शान्त होओ, मेरे मानापमान पर ध्यान मत दो। धर्मोपदेशक को तो भूमि के सदृश्य सहनशीलता सम्पादन करनी चाहिये।" इस पर बलदेव शान्त हो गये और पण्डितजी भी लज्जित-से होकर चुप हो गये और वहाँ से भाग निकले।

२९

भड़ौंच में एक पारसी ईसाई हो गये थे। उन्होंने ब्राह्मणों की सहायता से मूर्तिपूजा की सिद्धि में व्याख्यान का आयोजन किया। व्याख्यान में पधारने के लिए स्वामीजी को भी उन्होंने निमन्त्रित किया। स्वामीजी व्याख्यान में पहुँच गये। व्याख्याता ने 'मूर्तिपूजा' विषय पर बोलते हुए स्वामीजी के लिए बुरे-भले शब्द कहे। सभा में कुछ-एक पूर्व के सैनिक भी बैठे हुए थे। वे स्वामीजी के अपमान को न सह सके। वे कोपावेश में आकर व्याख्याता को पीटना चाहते थे कि स्वामीजी ने तुरन्त रोकते हुए कहा—"वीर पुरुषो! अपमानकर्ता का अपमान करने से उसका सुधार नहीं होता, किन्तु सम्मान देने से वह सुधर जाता है। जैसे आग में आग डालने से आग शान्त नहीं होती, वैसे ही द्वेष-बुद्धि उसके साथ द्वेष करने से दूर नहीं हो सकती। अग्नि को शान्त करने का साधन जल है। इसी प्रकार द्वेष को मिटाने का साधन शान्ति-धारण करना है।" इस पर सैनिक शान्त हो गये।

इसी प्रसंग में एक दिन वकील जेठालालजी ने स्वामीजी से प्रार्थना की—"महाराज! यदि आप मूर्तिपूजा का मण्डन करने लग जाएँ, तो हम आपको शंकर का अवतार मानने लग जाएँगे।" स्वामीजी ने उत्तर

दिया—"काशीनरेश ने मुझे विश्वनाथ की गद्दी का लालच दिया था। किन्तु मैं किसी सांसारिक वासना के वशीभूत होकर सत्य का परित्याग कभी भी नहीं कर सकता।"

३०

भारत के महापुरुषों में श्रीयुत महादेव गोविन्द रानाडे का नाम बड़ा प्रसिद्ध है। वे हाईकोर्ट के प्रतिष्ठित जज थे। उन्होंने अत्याग्रह किया कि स्वामीजी महाराज पूना पधारें। उनके आग्रह पर स्वामीजी आषाढ़ १९३२ को पूना पधारे। पूना में स्वामीजी के ५ व्याख्यान हुए। जब स्वामीजी पूना से विदा होने लगे, तो रानाडे महोदय ने स्वामीजी के विशाल जलूस का आयोजन किया। स्वामीजी का जलूस हाथी पर निकाला गया। जलूस का नेतृत्व रानाडे ही कर रहे थे। उधर दूसरी ओर कुछ-एक उपद्रवकारियों ने गधे का जलूस निकाला। ज्यों-ज्यों स्वामीजी का जलूस आगे बढ़ता जाता था, त्यों-त्यों उन लोगों का उत्पाद भी बढ़ता जाता था। उस दिन कुछ बून्दाबान्दी भी हो गयी थी, इससे कहीं-कहीं मार्ग में कीचड़ हो रहा था। उपद्रवियों ने गाली-गलौच करना, स्वामीजी पर कीचड़ उछालना और ईंट-पत्थरों की वर्षा करना प्रारम्भ किया, परन्तु इन सब उत्पातों से स्वामीजी के चेहरे पर किंचित्मात्र भी भेद नहीं आया। वे बराबर हँसते रहे और रानाडे जी द्वारा पुलिस को आदेश दिया कि वह किसी भी उपद्रवी को कुछ न कहे, और ऐसा ही किया गया। इस कीचड़-उछाल में रानाडेजी के कपड़े भी कीचड़ से लतपत हो गये। परन्तु स्वामीजी की आज्ञा सबने शिरोधार्य की। स्वामीजी का जलूस निकालने वालों ने पूर्ण शान्ति रखी।

जलूस-समारोह में ही एक भक्त ने स्वामीजी को समाचार दिया—"भगवन्! विपक्षी लोग आपको गालियाँ दे रहे हैं।" स्वामीजी ने कहा—"अच्छा है, गालियों से पेट खाली हो लेगा, तो अच्छे शब्द कहेंगे।"

"भगवन्! एक आदमी का मुँह काला कर गधे पर चढ़ाया हुआ है और उसे आपका नाम ले-लेकर पुकारते हैं।" उत्तर मिला "महाशय! सच्चे दयानन्द को तो कोई कालिमा नहीं लगी। हाँ, बनावटी दयानन्दों का मुख काला होना ही है।"

"भगवन् आपका नाम ले-लेकर पत्थर फेंकते हैं।" स्वामीजी ने कहा—"ठीक है, कल पत्थर पूजते थे आज फेंकते हैं, सो मेरी बात मान ली।"

"भगवन्! आपको जन्म से नीच बतलाते हैं।" उत्तर मिला—"मैं भी तो यही कहता हूँ कि जन्म से सब नीच हैं। जिसने पढ़ा-पढ़ाया वह ब्राह्मण हो गया, जो धर्म के लिए युद्ध में लड़ा वह क्षत्रिय हुआ, जिसने

व्यापार-पशुपालन या कृषि की, वह वैश्य हुआ, नहीं तो शूद्र। मैंने ब्राह्मण के यहाँ जन्म लिया था। ब्राह्मण के पुत्र को जन्म से नीच माना तो मेरे ही सिद्धान्त पर आये। मुझे तो यह बात सुनकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई है।"

इस प्रकार स्वामीजी उन दुर्वचनों का अच्छा अर्थ लेते रहे और तनिक भी क्रोध नहीं किया, प्रत्युत हँसमुख ही बने रहे।

३१

थियोसोफिकल सोसायटी की नेत्री मेडम ब्लैवट्स्की ने अपने लेखों में लिखा है कि एक समय स्वामीजी महाराज बंगाल प्रान्त के एक नगर में व्याख्यान दे रहे थे। एक दुष्ट मनुष्य ने भीषण विषधर फणियर साँप उनके पाँव के समीप फेंक दिया। स्वामीजी तनिक भी विचलित नहीं हुए। उन्होंने उस विषधर सर्प के सिर पर अपने पैर की एड़ी रखकर उसे कुचल दिया और अपना व्याख्यान जारी रखा।

पर्व ४—स्वामीजी की आत्मकहानी

३२

शाहजहाँपुर (युक्तप्रान्त) से पाँच कोस के फासले पर चान्दापुर गाँव है। एक समय स्वामीजी वहाँ ठहरे हुए थे। एक दिन बातचीत के प्रसंग में स्वामीजी ने आप बीती सुनाई—

"जिन दिनों मैं एकाकी विचरा करता था, उन दिनों मेरा एक ऐसे स्थान पर जाना हुआ जहाँ सभी शाक्त बसते थे। उन्होंने मेरी बड़ी सेवा-सुश्रूषा की। जब कई दिन के निवास के अनन्तर मैं वहाँ से चलने लगा तो उन लोगों ने अत्याग्रह से मुझे ठहरा लिया। मैं समझता रहा कि वे भक्तिभाव से मुझे ठहरा रहे हैं। ऐसे ही बहुत दिन बीत जाने पर उनका पर्व-दिन आ गया। उस दिन सारे शाक्त देवी के मन्दिर में एकत्र होकर गीत गाने लगे। उस दिन उन्होंने मुझे भी कहा कि आज हमारे मन्दिर में महोत्सव है, आप वहाँ अवश्य चलिए। मैंने बहुत समझाया कि देवी के दर्शनों में मेरा निश्चय नहीं है, परन्तु वे एक न सुनते थे। पाँव पकड़-कर कहने लगे कि यदि आज वर्ष के दिन आप मन्दिर में न पधारेंगे, तो हमारा सारा उत्साह भंग हो जाएगा। आप मूर्ति को नमस्कार आदि कुछ भी न करना, परन्तु हमारे लिए चले तो चलिए।

वह मन्दिर नगर से बाहर एक उजाड़ एकान्त में था। उनके विवश करने पर मुझे मन्दिर में जाना पड़ा। उस समय वहाँ आँगन में होम हो

रहा था, और लोग उत्सव मना रहे थे। मुझे वे दुर्गा की मूर्ति दिखलाने के बहाने अन्दर ले गये। मैं सहज स्वभाव से दुर्गा की प्रतिमा के सम्मुख जा खड़ा हुआ। मूर्ति के पास ही एक बलिष्ठ व्यक्ति नंगी तलवार लिये खड़ा था।

वहाँ के लोग मुझे कहने लगे—"महात्माजी ! माता के आगे झुककर नमस्कार अवश्य कीजिए।" मैंने उनको स्पष्ट शब्दों में कहा, "मुझसे ऐसी आशा करना दुराशा मात्र है।" मेरे कथन से पुजारी चिढ़ गया और पास आकर मेरी ग्रीवा को पकड़कर, मेरे सिर को नीचा करने लगा। उसके इस वर्ताव से मैं चकित हो गया। परन्तु, ज्यों ही मैंने दृष्टि फिराई तो क्या देखता हूँ कि वह खड्गधारी मेरे पास आ गया है और मेरी ग्रीवा पर खड्ग बरसाना ही चाहता है।

इस दृश्य को देखकर मैं तुरन्त सावधान हो गया। मैंने झपटकर उसके हाथ से तलवार छीन ली। पुजारी तो मेरे बायें हाथ के एक ही धक्के से मन्दिर की दीवार से जा टकराया, मैं तलवार लिये मन्दिर के आँगन में आ गया। उस समय आँगन के सभी लोग कुल्हाड़ा-छुरा आदि शस्त्र लेकर मुझपर टूट पड़े। द्वार की ओर देखा तो उसको ताला लगा हुआ था। अपने आपको बलिदान से बचाने के लिए मैं उछलकर दीवार पर चढ़ गया और कूदकर दीवार के परले पार भाग निकला। उस स्थान के समीप ही एक वन था। दिन भर तो मैं वहाँ छुपा बैठा रहा, परन्तु जब रात का राज्य विस्तृत हुआ, तो रातों-रात ग्रामान्तर में जा पहुँचा। उस दिन से मैंने शाक्त लोगों का कभी भी विश्वास नहीं किया।

३३

संवत् १९३४ के वैशाख मास में स्वामीजी लाहौर ठहरे हुए थे। वहाँ बावली साहब में स्वामीजी के दो व्याख्यान हुए। व्याख्यान में प्रसङ्गानुसार स्वामीजी ने आपबीती तीन घटनाएँ इस प्रकार सुनाईं—

(क) "एक बार मैं गङ्गातीर विचरता हुआ एक निविड़ सघन वन में जा निकला। वहाँ मुझे सामने आता एक केसरी सिंह दृष्टिगोचर हुआ। मैं सीधा चलता हुआ जब उसके पास पहुँचा, तो वह सिंह मेरी ओर देख मुँह फिराकर जंगल में चला गया।"

(ख) "एक बार मैं एक पर्णकुटी में आसन जमाये बैठा था, उसके पास ही कुछ साधु रहते थे। वे अकारण ही मेरे द्वेषी बन गये। जब महाकाली निशा आकाश की निविड़ कालिमा के साथ एकाकार हो रही थी, तब वे साधु मुझे मार-मिटाने के लिए मेरी कुटिया पर आये और

वध की विधि सोचने लगे। उनकी बातें मुझे सुनाई पड़ रही थीं। थोड़ी देर तक परस्पर परामर्श करने के अनन्तर उन्होंने मेरी झोंपड़ी में आग लगा दी। जब घास-फूस की कुटी को आग की लपटें लपेटकर भस्मीभूत करने लगीं, तो मैं छप्पर को उठाकर बाहर निकल आया और अपने शरीर की रक्षा की।"

(ग) "एक दिन जबकि मैं बनारस में व्याख्यान दे रहा था, एक मनुष्य ने मुझे पान लाकर दिया। ज्योंही मैंने उसे मुख में रखकर उसका रस चूसा, तो मुझे ज्ञात हुआ कि इसमें विष मिला हुआ है। मैंने तत्काल वमन द्वारा उसे बाहर निकाल दिया।"

पर्व ५—राजस्थान में

३४

जोधपुर के महाराजा ने स्वामीजी से विनयपूर्वक बारम्बार अभ्यर्थना की कि वे उनके राज्य जोधपुर में पधारें। इसपर स्वामीजी संवत् १९४० के ज्येष्ठ माह में शाहपुरा राज्य से जोधपुर जाने को समुद्यत हुए। जोधपुर की अवस्था से शाहपुराधीश भली-भाँति परिचित थे। उन्हें भय था कि वहाँ कहीं स्वामीजी के जीवन की हानि न हो जाए, अतएव उन्होंने स्वामीजी से निवेदन किया—"भगवन्! राजा लोग भोग-विलास मनमाने आमोद-प्रमोद में निमग्न रहा करते हैं। जहाँ आप पधारने लगे हैं, वहाँ वेश्याओं का अधिक खण्डन न कीजिएगा।" स्वामी ने उत्तर दिया, "मैं बड़े-बड़े कंटीले वृक्षों को नहेरने से नहीं काटा करता, उनके लिए तो अतितीक्ष्ण शस्त्रों की आवश्यकता होगी।"

इसी प्रकार शाहपुरा के अन्य आर्यपुरुषों ने भी जोधपुर जाने में आशंका समुपस्थित की, परन्तु स्वामीजी ने उन्हें भी इसी प्रकार का उत्तर दिया—"यदि लोग हमारी अंगुलियों को बत्तियाँ बनाकर जला दें, तो भी कोई चिन्ता नहीं। मैं वहाँ जाकर अवश्य सत्योपदेश दूँगा।"

३५

सत्य-व्रत के धनी महाराज अपने निश्चय पर अटल रहे और जोधपुर को प्रस्थान किया। उस समय वहाँ के महाराजा श्रीमान् यशवन्तसिंहजी और राजकुमार श्रीयुत प्रतापसिंहजी थे। जोधपुर स्वामीजी मियां फैजुल्लाखाँ के उद्यान में ठहरे। इसी उद्यान में आकर समय-समय पर महाराजा यशवन्तसिंहजी स्वामीजी से शिक्षा ग्रहण किया करते थे। कई बार महाराजा ने स्वामीजी से सविनय प्रार्थना कि वे उनके राजभवन में

पधार कर कृतार्थ करें। एक दिन स्वामीजी बिना पहले कोई सूचना दिये राजभवन पहुँच गये। उन्होंने देखा वहाँ एक वेश्या विद्यमान है। महाराजा ने स्वामीजी को आते देख जल्दी-जल्दी वाराङ्गना को पालकी में बिठलाया और शीघ्र वहाँ से चलता किया। महाराजा ने समझा स्वामीजी ने इसे नहीं देखा।

इस वेश्या का मान राज्यभर में राज-संसर्ग के कारण अत्यधिक था। राज्य के सभी नौकर-चाकर उससे काँपते थे, और यहाँ तक कि उच्च राजकर्मचारियों को भी उसे प्रसन्न रखना पड़ता था।

स्वामीजी ने महाराजा को वेश्या-संसर्ग पर बहुत अधिक फटकारा और कहा—"राजन्! राजा लोग सिंह समान समझे जाते हैं। स्थान-स्थान पर भटकनेवाली वेश्या कुतिया के सदृश्य है। वीर शार्दूल का कृपणा कुतिया से प्रेम करना और उसपर आसक्त हो जाना सर्वथा अनुचित है, आर्यजाति की कुल-मर्यादा के विपरीत है। केसरी की कन्दरा में, ऐसी कल्मष-कलुषित कुक्करी के आगमन का क्या काम है? इस कुव्यसन के कारण धर्म-कर्म भ्रष्ट हो जाता है, मान-मर्यादा को बट्टा लगता है। इस पाप-सोपान पर प्रथम पदार्पण करते ही, पुनः पद-पद पर पुरुष का अधःपतन आप-ही-आप होता चला जाता है। इस दुर्व्यसन को तिलाञ्जलि दे देनी चाहिए।"

उपदेश देने के अनन्तर स्वामीजी अपने निवास-स्थान पर लौट आये। रह-रहकर ऐसे-ऐसे महाराजा लोगों के अधःपतन के कारण प्रजा के दुःखों का दृश्य उनके सामने आता रहा। भक्तजनों से वार्तालाप करते हुए उन्होंने कई बार अपनी हृदय की हूक को प्रदर्शित करते हुए कहा—"हमारे देश के बड़े-बड़े मनुष्यों के आचार-विचार तो इतने बिगड़ गये हैं कि इनका सर्वनाश कभी का हो चुका होता। परन्तु इनकी पत्नियों का पतिव्रत-धर्म ही इन्हें अभी तक बचाये हुए, कुलवती आर्य-नारियाँ ही अपने धर्म से इनकी रक्षा कर रही हैं।"

स्वामीजी ने अपने निवास-स्थान से राजकुमार प्रतापसिंह को जोधपुराधीश के लिए एक पत्र लिखा—

श्रीयुत मान्यवर शूरवीर महाराजा प्रतापसिंह जी!

आनन्दित रहो।

यह पत्र बाबा महाशय के दृष्टिगोचर भी करा दीजिएगा। मुझे इस बात का बहुत शोक होता है कि श्रीमान् जोधपुराधीश आलस्य आदि में वर्तमान हैं और आप तथा बाबा महाशय रोगी शरीरवाले हैं। इस राज्य में १६ लाख से अधिक मनुष्य बसते हैं, उनके रक्षण और कल्याण का

बड़ा भार आप लोग उठा रहे हैं। उनका सुधार-बिगाड़ भी आप तीन महाशयों (महाराजा यशवन्तसिंह, राजकुमार प्रतापसिंह, राव राजा तेजसिंह) पर है। तथापि आप लोग अपने शरीर की रोग से रक्षा करने और आयु बढ़ाने के काम पर बहुत अल्प ध्यान देते हैं। यह बात कितनी बड़ी शोचनीय है।

मैं चाहता हूँ कि आप लोग अपनी दिनचर्य्या मुझसे सुधार लें, जिससे मारवाड़ तो क्या अपने आर्यावर्त देशभर का कल्याण करने में आप लोग प्रसिद्ध हो जाएँ। आप-जैसे योग्य पुरुष जगत् में बहुत थोड़े जन्मते हैं और जन्मकर भी बहुत स्वल्प आयु भोगते हैं। इसके हुए बिना देश का सुधार कभी नहीं होता। आप-जैसे पुरुष जितना अधिक जिएँ उतनी ही अधिक देशोन्नति होती है। इसपर आप लोगों को ध्यान अवश्य देना चाहिए। आगे जैसी आप लोगों को इच्छा हो।

आश्विन वदी तृतीया
संवत् १९४० } ह० दयानन्द सरस्वती

उस वेश्या की राज-दरबार से पूछ उठ गयी। इससे उसको बड़ी गहरी ठेस पहुँची। फिर क्या था, उसने स्वामीजी के विरुद्ध षड्यन्त्र रचना प्रारम्भ किया। यह षड्यन्त्र बड़ा गहरा था। इसमें कुछ-एक उच्च राजकर्मचारी भी सम्मिलित थे। उधर स्वामीजी के खण्डन से मुँह की खाये हुए सम्प्रदायी लोग भी मिल गये थे। स्वामीजी के विश्वस्त पाचक को लालच देकर फोड़ा गया। स्वामीजी रात्रि को दूध पीया करते थे। आश्विन वदी चतुर्दशी संवत् १९४० को दूध में हलाहल विष घोल-कर पिला दिया गया।

थोड़ी देर बाद ही उदर-शूल के साथ-साथ वमन आने प्रारम्भ हो गये। पीड़ा इतनी असह्य थी कि बड़े-बड़े डॉक्टर-वैद्य भी देखकर दाँतों तले अंगुलि दबाते थे कि इतना असह्य कष्ट! और इस प्रकार सर्वथा शान्तचित्त लेटे रहना!! ऐसे भयानक शूल में तो वीर-से-वीर पुरुष भी जीवित नहीं रह सकता, ये कैसे प्राण धारण कर रहे हैं?

स्वामीजी को कालकूट विष के प्रयोग का भान हो गया। परन्तु, दया के धनी दयानन्द ने जोधपुराधीश या अन्य किसी भक्त को इसका भेद नहीं दिया। उन्होंने अपने पाचक को बुलाया और प्रेमपूर्वक समझा-कर पूछा तो उसने समस्त वार्ता आद्योपान्त सुना दी। दया में आनन्द देखनेवाले दयानन्द ने उस पाचक को ताड़न-तर्जन करना तो क्या, 'तू' तक नहीं कहा और बोले—

"जगन्नाथ! मेरे इस समय मरने से मेरा कार्य सर्वथा अधूरा रह

गया। आप नहीं जानते कि इससे लोक-हित की कितनी भारी हानि हुई है। अच्छा, विधाता के विधान में ऐसा ही होना था, इसमें आपका भी क्या दोष है। जगन्नाथ ! लो, ये कुछ रुपये हैं, मैं आपको देता हूँ, आपके काम आएँगे। परन्तु, जैसे भी हो राठौर-राज्य की सीमा से पार हो जाओ। नेपाल राज्य में जा छिपने से ही आपके प्राणों का परित्राण हो सकता है। यदि यहाँ के नरेश को घुणाक्षर न्याय से भी इस बात का पता लग गया, तो वे आपका बिन्दु-विसर्ग तक विनष्ट करके ही विश्राम लेंगे। उनके प्रकोप के उत्ताप से आपका परित्राण कोई भी न कर सकेगा। जगन्नाथ ! अब देर मत करो, जाओ, चुपचाप भाग जाओ। देखना, किसी को स्थालीपुलाक न्याय से भी आपका कर्म ज्ञात न हो जाए। मेरी ओर से सर्वथा निश्चिन्त रहना। इस हृदय-सागर से आपका भेद किसी प्रकार कभी भी प्रकाशित न होगा।"

इस प्रकार अहिंसा की साक्षात् मूर्ति स्वामी दयानन्द ने अपने प्राण-घातक को न केवल क्षमा प्रदान की, अपितु अपने पास से द्रव्य देकर और तुरन्त भागकर नेपाल में जा छिपने का उपाय बताकर उसके प्राणों की रक्षा की।

यह स्वामीजी के अहिंसा के प्रयोगों में अन्तिम प्रयोग था, और इस प्रकार सत्य-अहिंसा के प्रयोग में ही अपनी जीवनाहुति समर्पित की। आश्विन वदी चतुर्दशी को हलाहल विष दिया गया था। ठीक एक मास एक दिन तक वीर आत्मा ने उस विष के साथ अनुपम घोर युद्ध किया और अन्तिम समय तक सर्वथा प्रसन्नमुख रहे। हँसते-हँसते ओ३म् का जाप, गायत्री मन्त्र का उच्चारण और 'प्रभु ! तेरी इच्छा पूर्ण हो' कहते हुए कार्तिक अमावस्या, मंगलवार, दीवाली के दिन सायं ६ बजे सूर्यास्त के साथ-साथ भगवान् दयानन्द-भास्कर भी तिरोहित हो गये और अपने पीछे दीपमाला का प्रकाश छोड़ गये। यह प्रकाश इस बात का प्रकाशक था कि देखो, आँखोंवाले देखो, मनुष्य कहलानेवाले देखो, अहिंसा में प्रकाश-ही-प्रकाश है, अन्धकार का लव-लेश भी नहीं।

□□□

हमारे लोकप्रिय प्रकाशन

स्व० आनन्द स्वामी कृत पुस्तकें

दुनिया में रहना किस तरह	६.५०
तत्त्वज्ञान	१५.००
मानव और मानवता	२०.००
प्रभुमिलन की राह	१५.००
घोर घने जंगल में	१५.००
प्रभुभक्ति	५.००
महामन्त्र	४.५०
आनन्द गायत्री-कथा	४.००
उपनिषदों का सन्देश	१२.००
एक ही रास्ता	५.००
मानव-जीवन-गाथा	६.००
सुखी गृहस्थ	३.००
सत्यनारायणव्रत-कथा	३.००
प्रभु-दर्शन	१२.००
दो रास्ते	१२.००
यह धन किसका है ?	१२.००
भक्त और भगवान्	५.००
शंकर और दयानन्द	३.००
बोध कथाएं	१२.००
Anand Gayatri Discourses	३.००

श्री रणवीर लिखित

आनन्द स्वामी जीवनी (उर्दू)	१०.००

पं० सत्यपाल विद्यालंकार

श्रीमद्भगवद्गीता	८.००

डॉ० भवानीलाल भारतीय

श्रीकृष्ण चरित	२५.००

प्रो० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार

वैदिक विचारधारा का वैज्ञानिक आधार	५०.००
वैदिक संस्कृति का सन्देश	३५.००
ब्रह्मचर्य सन्देश	१५.००

डॉ० प्रशान्त वेदालंकार

धर्म का स्वरूप	३५.००
जीवन के पाँच स्तम्भ	३५.००
वैदिक राज्य व्यवस्था	२०.००

पं० नरेन्द्र

हैदराबाद के आर्यों की साधना	६.००

स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती कृत

चाणक्यनीति दर्पण	४०.००
वाल्मीकि रामायण	८०.००
महाभारतम्	३००.००
शुक्रनीतिसारः	४५.००
षड्दर्शनम्	५०.००
प्रार्थना प्रकाश	४.००
प्रभात वन्दन	४.००
वैदिक विवाह पद्धति	४.००
ब्रह्मचर्य गौरव	५.००
विद्यार्थियों की दिनचर्या	५.००
मर्यादा पुरुषोत्तम राम	१०.००
चमत्कारी ओषधियाँ	६ ००
घरेलू ओषधियाँ	५.००
ऋग्वेद का अक्ष-सूक्त	१.००
दिव्य दयानन्द	३.००
ऋग्वेद सूक्ति-सुधा	२५.००
यजुर्वेद-सूक्ति-सुधा	१२.००
सामवेद सूक्ति-सुधा	१०.००
अथर्ववेद सूक्ति-सुधा	१५.००
आदर्श परिवार	८.००
भक्ति संगीत शतकम्	३.००
सत्यनारायण व्रत कथा	०.५०
ऋग्वेदशतकम्	४.००
यजुर्वेदशतकम्	४.००
सामवेदशतकम्	४.००
अथर्ववेदशतकम्	४.००

पं० मदनमोहन विद्यासागर

संस्कार समुच्चय	४५.००
सत्यार्थ सरस्वती	२५.००
ईश्वर प्रत्यक्ष	६.००

प्रो० नित्यानन्द वेदालंकार

पूर्व और पश्चिम	३५.००
प्रेमचन्द के उपन्यास साहित्य में सांस्कृतिक चेतना (पुरस्कृत)	१२५.००

गोविन्दराम हासानन्द, नई सड़क, दिल्ली-६

कर्मकाण्ड की पुस्तकें

वैदिक सन्ध्या	०.५०
आर्यसत्संग गुटका	१.५०
पंचयज्ञ प्रकाशिका	४.००

चित्र - चित्र - चित्र

महर्षि दयानन्द रंगीन २० × ३०	३.००
महर्षि दयानन्द एक रंग १८ × २२	२.००
गुरु विरजानन्द एक रंग १८ × २२	२.००
स्वामी श्रद्धानन्द ,, ,,	२.००
स्वामी दर्शनानन्द ,, ,,	२.००

पं० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार

वैदिक विचारधारा का वैज्ञानिक आधार	५०.००
वैदिक संस्कृति का सन्देश	३५.००
ब्रह्मचर्य सन्देश	१५.००
वैदिक संस्कृति के मूल तत्त्व	४०.००
From Old Age to Youth	78.00
एकादशोपनिषद्	७५.००
उपनिषद् प्रकाश	६५.००
संस्कार-चन्द्रिका	५०.००
बुढ़ापे से जवानी की ओर	४०.००
होमियोपैथिक के मूल सिद्धान्त	२५.००
होमियोपैथिक औषधियाँ चित्रण	६०.००
रोग उनकी होमियो० चिकित्सा	७५.००
श्रीमद् भगवद् गीता	५०.००

बालोपयोगी

पं० हरिश्चन्द्र विद्यालंकार

वैदिक शिष्टाचार	०.६०

त्रिलोकचन्द विशारद

महर्षि दयानन्द	१.५०
स्वामी श्रद्धानन्द	१.५०
गुरु विरजानन्द	२.५०
पं० लेखराम	१.५०
स्वामी दर्शनानन्द	१.५०
पं० गुरुदत्त	१.५०

पं० सत्यभूषण वेदालंकार एम० ए०

नैतिक शिक्षा	प्रथम भाग	०.७५
नैतिक शिक्षा	द्वितीय भाग	०.७५
नैतिक शिक्षा	तृतीय भाग	१.००
नैतिक शिक्षा	चतुर्थ भाग	१.५०
नैतिक शिक्षा	पंचम भाग	२.००
नैतिक शिक्षा	षष्ठ भाग	२.००
नैतिक शिक्षा	सप्तम भाग	२.००
नैतिक शिक्षा	अष्टम भाग	२.००
नैतिक शिक्षा	नवम भाग	२.५०
नैतिक शिक्षा	दशम भाग	२.५०

महर्षि दयानन्द सरस्वती

सत्यार्थप्रकाश	२५.००

भजन पुस्तकें

भक्ति संगीत शतकम् (संकलन)	३.००
गीत श्रद्धांजलि	१.५०

स्वामी दर्शनानन्द

बालशिक्षा-धर्मशिक्षा	१.००

स्वामी योगेश्वरानन्द सरस्वती कृत

आत्म विज्ञान	हिन्दी	४०.००
	अंग्रेजी	३५.००
बहिरंग योग	हिन्दी	४५.००
	अंग्रेजी	३५.००
ब्रह्म विज्ञान	हिन्दी	७५.००
	अंग्रेजी	३५.००
निर्गुण ब्रह्म	हिन्दी	२५.००
	अंग्रेजी	२०.००
प्राण विज्ञान	हिन्दी	२५.००
	अंग्रेजी	३०.००
हिमालय का योगी (दो भाग)	हिन्दी	४०.००
	अंग्रेजी	४०.००
दिव्य ज्योति विज्ञान हिन्दी		४०.००
दिव्य शब्द विज्ञान हिन्दी		४०.००
व्याख्यान माला (तीन भाग)	हिन्दी	८५.००

गोविन्दराम हासानन्द, नई सड़क, दिल्ली-६

पं० उदयवीर शास्त्री

सांख्य दर्शन का इतिहास	५०.००
वेदान्त दर्शन का इतिहास	४०.००
ब्रह्मसूत्र (वेदान्त)	८०.००
सांख्य सिद्धान्त	४०.००
सांख्य दर्शन	२५.००
वैशेषिक दर्शन	४०.००
न्याय दर्शन	४०.००
योग दर्शन	४०.००
ब्रह्मसूत्र	८०.००

पं० चन्द्रमणि

निरुक्त हिन्दी भाषा दो भाग	६०.००

पं० आर्यमुनि

वेदान्त दर्शन	६०.००
योगार्य भाष्य	६.००
सांख्यार्य भाष्य	२०.००
वैशेषिक दर्शन	४०.००
न्यायदर्शन	५०.००

लेखराम

कुलियात आर्य मुसाफिर I-II	६०.००

वेदभाष्य महर्षि दयानन्द

ऋग्वेद भाष्यम् ६ भाग	१३०.००
ऋग्वेद भाषा भाष्य ६ भाग	६६.००
यजुर्वेद भाष्यम् ४ भाग	७०.००
यजुर्वेद भाषा भाष्य २ भाग	४०.००
ऋग्वेद संहिता (मूल)	४०.००
अथर्ववेद ,,	३५.००
यजुर्वेद ,,	१५.००
सामवेद ,,	१५.००

वीर सावरकर कृत

स्वातन्त्र्य संग्राम १८५७	५०.००
हिन्दुत्व	८.००
क्रान्ति का नाद	६.५०
क्रान्तिकारी चिट्ठियाँ	१०.००

वैद्य गुरुदत्त

ब्रह्मसूत्र (दो भाग)	६४.००
न्याय दर्शन	४५.००
सांख्य दर्शन	४०.००
भारत : गाँधी-नेहरू की छाया में	६.००
राष्ट्र राज्य और संविधान	१५.००
बुद्धि बनाम बहुमत	१५.००
युगपुरुष राम	३.००
द्वितीय विश्वयुद्ध	३.००
महर्षि दयानन्द	३.००
दो लहरों की टक्कर (दो भाग)	९६.००
मैं हिन्दू हूँ	१५.००
भाव और भावना	१२.००
वर्तमान दुर्व्यवस्था का समाधान हिन्दूराष्ट्र	१५.००

पं० जयदेव विद्यालंकारकृत

ऋग्वेद ७ खण्डों में	२१०.००
अथर्ववेद ४ खण्डों में	१२०.००
यजुर्वेद २ खण्डों में	६०.००
सामवेद १ खण्ड में	३०.००

पं० सत्यकेतु विद्यालंकार कृत

आर्यसमाज का इतिहास (भाग १)	१००.००
,, ,, (भाग २)	११०.००
,, ,, (भाग ३)	१००.००
प्राचीन भारतीय इतिहास का वैदिक युग	२८.००
दक्षिण पूर्वी और दक्षिणी एशिया में भारतीय संस्कृति	२३.००
म० एशिया व चीन में भारतीय ,,	२०.००
प्राचीन भारत	२८.००
भारतीय संस्कृति का विकास	२४.००
प्राचीन भारत का धार्मिक, सामाजिक और आर्थिक जीवन	२४.००
एशिया का आधुनिक इतिहास	४४.००
प्रमुख राज्यों के संविधान	२४.००
समाज शास्त्र	३०.००
चाणक्य	२२.००
पतन और उत्थान	२६.००
सविता देवता भगवद्दत्त	३५.००
बृहस्पति देवता भगवद्दत्त	४०.००

हमारे विशिष्ट संग्रहणीय प्रकाशन

आलोचना

प्रो० नित्यानन्द पटेल

प्रेमचन्द के उपन्यास साहित्य में सांस्कृतिक चेतना 125.00
छायावाद : नया मूल्यांकन 35.00
पूर्व और पश्चिम 35.00

उपन्यास तथा कथा साहित्य

शरत्चन्द्र चट्टोपाध्याय

अपने पराये 12.00
अकेली 12.00
चन्द्रनाथ 12.00
अनुराधा 12 00
परिणीता 12.00
बैकुंठ का दानपत्र 12.00
बड़ी दीदी 12.00
देवदास 15.00
बिराज बहू 12.00
बिन्दु का बेटा 12.00
ब्राह्मण की बेटी 12.00

सुनील शर्मा

हितोपदेश 25.00

वि० अनन्त

माँ 30.00
आज की सावित्री 30.00
सुहागिन 30.00
दुल्हन 30.00

राजीव वत्स

आधा आदमी 25.00

तकनीकी

हयात

सुबोध रेडियो ट्रांजिस्टर मैकेनिक 25.00
सुबोध ट्रांजिस्टर सर्विसिंग 20.00
सुबोध ट्रांजिस्टर गाइड 25.00

घर गृहस्थी

डा० लक्ष्मीनारायण शर्मा

गर्भ स्थिति, प्रसव और शिशुपालन 25.00

सुशीला कपूर

आधुनिक सिलाई-कटाई 25.00

मीनाक्षी धींगड़ा

पाक कला (पॉकेट साइज) 6.00
मिष्ठान्न कला (पॉकेट साइज) 6.00
अचार मुरब्बे चटनी (पॉकेट साइज) 6.00

स्वास्थ्य

डा० लक्ष्मीनारायण शर्मा

हृदय रोग : कारण निवारण 20.00

डा० टी० बी० एल० जायसवाल

कैंसर : कारण और निवारण 20.00

वैद्य सुरेश चतुर्वेदी

आहार चिकित्सा 25.00

डा० समरसेन

योगासन से इलाज 20.00
घरेलू इलाज 12.00

विविध

अरुण अर्णव

सचित्र एशियाई खेल (9वें एशियाई खेलों तक) 25.00

राजीव वत्स

जूडो फॉर ऑल 15.00

नरेन्द्रनाथ

सिगरेट बीड़ी कैसे छोड़ें 12.00

रवीन्द्रनाथ ठाकुर

गीताञ्जलि 25.00

कृष्ण चिकल

अमृतवाणी 20.00

बाल एवं प्रौढ़ साहित्य

आचार्य चतुरसेन

आदर्श बालक भाग-1	6.00
आदर्श बालक भाग-2	6.00

सन्तराम वत्स्य

लोक व्यवहार	5.00
संविधान की कहानी	10.00
भीष्म पितामह	6.00
वीर अर्जुन	6.00
महाबली भीम	6.00

यशपाल जैन

बोध कथाएँ	5.00
ज्ञान कथाएँ	5.00
प्रेरक कथाएँ	5.00

श्यामचन्द्र कपूर

प्रत्येक का मूल्य 6.00

सच्चा सपूत (जातक कथाएँ)
नंदिनी का वरदान (रामायण की कथाएँ)
शरणागत की रक्षा (वेद की कथाएँ)
कीर्ति का मार्ग (महाभारत की कथाएँ)
सबसे बड़ा ज्ञानी (उपनिषद् की कथाएँ)
फूलों की वर्षा (पुराण की कथाएँ)
विश्वास का फल (कुरान की कथाएँ)
जनता का प्यारा (भागवत की कथाएँ)
सपने देखने वाला (जैन-ग्रन्थ की कथाएँ)

सुमेधा

हमारी एकता के प्रतीक त्यौहार	6.00

विनोदचन्द्र पांडेय 'विनोद'

ऋतुगीत		6.00
पितृभक्त बालक	**शरण**	6.00
तपस्वी बालक	**लक्ष्मी**	6.00
ज्ञानी बालक	**प्रभात कुमार**	6.00
भक्त बालक	**संगीता**	6.00
ईमानदार बालक	**सुदेश शरण**	6.00

शिवकुमार गोयल

क्रांतिकारी सावरकर	6.00

शान्ति भट्टाचार्य

बलिदान की कहानियाँ	6.00

स्कूल, कॉलेज में खेले जाने योग्य चिरंजीत के नाटक

हास्यमंच—हम-तुम	18.00
हास्यमंच—घर-दफ्तर	22.00
हास्यमंच—देश-विदेश	24.00
पाँच प्रहसन	20.00
मन्दिर की जोत	18.00
दादी माँ जागी	(प्रेस में)

सुबोध पब्लिकेशन्स
२/३ बी, अंसारी रोड, नयी दिल्ली-११०००२

सस्ती प्रेरणाप्रद व ज्ञानवर्धक पुस्तकें (पॉकेट बुक्स में)

आप क्या नहीं कर सकते	स्वेट मार्डन	३.००
चिन्तामुक्त कैसे हो	,, ,,	३.००
हँसते-हँसते कैसे जिएँ	,, ,,	३.००
जो चाहें सो कैसे पायें	,, ,,	३.००
अपना खर्च कैसे घटायें	,, ,,	३.००
अवसर को पहचानो	,, ,,	३.००
अपने आपको पहचानिये	,, ,,	३.००
आप सफल कैसे हों	,, ,,	३.००
उन्नति कैसे करें	,, ,,	३.००
धनकुबेर कैसे बने	,, ,,	३.००
रामायण	मनहर चौहान	५.००
महाभारत	,, ,,	५.००
पंचतन्त्र	गोपालकृष्ण कौल	५.००
हितोपदेश	सुनील शर्मा	६.००
स्वास्थ्य और योगासन	योगाचार्य भगवानदेव	५.००
आधुनिक पाककला	मीनाक्षी ढींगरा	६.००
आधुनिक मिष्ठान कला	,, ,,	६.००
अचार मुरब्बे चटनी	,, ,,	६.००
घरेलू इलाज	डॉ० समरसेन	६.००
आहार चिकित्सा	वैद्य सुरेश चतुर्वेदी	६.००
मजेदार चुटकले	कृष्ण विकल	४.००
हास परिहास	,, ,,	४.००
हँसो-हँसाओ	व्यंगकेतु	४.००
हस्त रेखा	नारायणदत्त श्रीमाली	६.००

हिन्दी में किसी भी पुस्तक की
आवश्यकता के लिए
हमें लिखें।

सुबोध पब्लिकेशन्स नई दिल्ली-११०००२

सुबोध अंग्रेजी-हिन्दी शब्दकोश

आमुख—डॉ० भोलानाथ तिवारी

इस कोश की विशेषताएँ

- ☐ वर्ण क्रमानुसार मुख्य शब्द सुन्दर मोटे टाइप में।
- ☐ सरल, सुबोध एवं प्रामाणिक उच्चारण निर्देश।
- ☐ क्रियार्थक व संज्ञार्थक मुहावरेदार अभिव्यक्तियाँ।
- ☐ अंग्रेजी हिन्दी लोकोक्तियाँ
- ☐ तकनीकी पारिभाषिक शब्दावली
- ☐ प्रशासनिक शब्दावली एवं वाक्यांश
- ☐ सरकारी कार्यालयों के नाम

डॉ० भोलानाथ तिवारी आमुख में लिखते हैं—

"कोश का मूलभाग लगभग पौने तीन सौ पृष्ठों का है, जिसमें शब्द, उसका उच्चारण, उसकी व्याकरणिक पहचान तथा अर्थ दिये गये हैं।

प्राय: कोशों में एक मूल शब्द देकर, उससे बनने वाले अन्य शब्द उसी पेटे में दिये जाते हैं किन्तु ऐसे कोश सामान्य प्रयोक्ताओं के लिए विशेष उपयोगी नहीं होते, सामान्य व्यक्ति को उसे पाने में थोड़ी परेशानी होती है। अंग्रेजी-हिन्दी के बहुप्रचलित कोश जैसे डॉ० बाहरी में इस कठिनाई का सामना करना पड़ता है।"

मूल्य पेपर बैक १५.००

पुस्तकालय संस्करण २५.००

सुबोध पब्लिकेशन्स

२/३ बी, अंसारी रोड नयी दिल्ली-११०००२

प्रकाशक-मुद्रक विजयकुमार ने सम्पादित कर अजय प्रिंटर्स, दिल्ली-३२ में मुद्रित करा वेदप्रकाश कार्यालय, ४४०८ नयी सड़क, दिल्ली से प्रसारित किया।